इतिहास दिवाकर

त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

वर्ष १० अंक ३ अश्विन मास कलियुगाब्द ५११९ अक्तूबर २०१७

मार्गदर्शक :
डॉ० शिवाजी सिंह
इरविन खन्ना

सम्पादक :
डॉ० विद्या चन्द ठाकुर

सह सम्पादक
चेतराम गर्ग

सम्पादन सहयोग :
डॉ० रमेश शर्मा
डॉ० ओम प्रकाश शर्मा

टंकण एवं सज्जा :
रवि ठाकुर

सम्पादकीय कार्यालय :
ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान,
नेरी, गांव-नेरी, डाकघर-खगल
जिला-हमीरपुर-१७७००१(हि०प्र०)
दूरभाष : ०९४१८४-८५४१५

मूल्यः
प्रति अंक - १५.०० रुपये
वार्षिक - ६०.०० रुपये

itihasdivakar@yahoo.com
chetramneri@gmail.com

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

जीवन वृत
- एक कर्मयोगी की जीवन यात्रा — चेतराम गर्ग — ३

संस्मरण
- दृढ़ इच्छा शक्ति — महन्त सूर्यनाथ — १८
- ईश्वर ने मुझे संघ कार्य के लिए भेजा है — डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री — १९
- जीवन दर्शन — डॉ. ओम प्रकाश शर्मा — २२
- आत्मीय रिश्ते — प्यार चन्द परमार — २२
- चित्रावली — २३
- कार्यकर्ता की संभाल — राजेन्द्र कुमार शर्मा — २७
- जैसे मैंने देखा — इन्द्र सिंह डोगरा — २८
- संगठन कला के सिद्धपुरुष — विजय नड्डा — २९
- मार खाकर मत आना, मार कर आओ — राजेन्द्र कुमार — ३०
- संघ कार्य के प्रेरणा स्त्रोत — मनसा राम — ३२

आलेख
- मिलेनियम बनाम वर्ष प्रतिपदा के बहाने से — ३४
- समर्थ गुरु राम दास जी की ४००वीं जयन्ती — ३७
- हिमाचल के संघ कार्य में एक छंलाग — ३९
- लक्ष्य साधक जीवन दर्शन — ४६

सम्पादकीय

कर्मठ ध्येय साधक

सहृदय मानस, कुशल प्रबन्धक एवं कर्मठ ध्येय साधक पुण्य आत्मा स्वर्गीय चेतराम जी हिमाचल प्रदेश के सामाजिक एवं सास्कृतिक कार्यों में रचे बसे थे। उन्होंने जन्म तो पंजाब की पुण्य भूमि में लिया, पर उनकी कर्मस्थली देवभूमि हिमाचल प्रदेश बनी।

स्वर्गीय चेतराम जी अपनी शिक्षा पूरी करने के उपरान्त सन् १९७१ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने और सन् १९८२ में हिमाचल आ गए। बस, हिमाचल की सेवा ही जीवन का ध्येय पथ बन गया। संघ के प्रचारक व प्रान्तकार्यवाह का दायित्व निर्वहन करते हुए विविध आयामों को साकार रूप में देने में अपना सर्वस्व लगा दिया।

स्वर्गीय चेतराम जी की विशिष्टता थी कि जो कार्य हाथ में ले लिया उसे करना ही है, चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो। उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि संघ के अतिरिक्त अन्य सामाजिक क्षेत्र में काम करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता उनसे विचार विमर्श किया करते थे।

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी की नींव ठाकुर रामसिंह ने रखी परन्तु उसे मूर्त रूप देने में स्वर्गीय चेतराम जी का महत्वपूर्ण योगदान है। उनके सुनियोजित प्रयासों से ही इस शोध संस्थान की स्थापना हुई। लम्बी बिमारी के बाद ५ अगस्त, २०१७ को पार्थिव शरीर को छोड़कर पंचतत्व में विलीन हो गए। सामान्य परन्तु प्रभावशाली एवं प्रेरक व्यक्तित्व के धनी स्वर्गीय चेतराम जी का जीवन समाज को सदा राष्ट्र सेवा में समर्पित होने की प्रेरणा देता रहेगा।

इस अंक में चेतराम जी का जीवन वृत्त, उनके निकट रहे कार्यकर्ताओं के संस्मरण, चित्रावली तथा समय–समय पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके लेखों को सम्मिलित किया गया है।

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी, स्वर्गीय चेतराम जी द्वारा चलाए गए कार्यों को आगे बढ़ाता रहेगा, यही उनके लिए सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

विनीत,

डॉ. विद्या चन्द ठाकुर

जीवन वृत्त

एक कर्म योगी की जीवन यात्रा

चेतराम गर्ग

जीवन यात्रा

स्वर्गीय चेमराम जी की जीवन यात्रा 'एक कर्म योगी' की जीवन यात्रा है। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी रहा है। उन्होंने पंजाब के झण्डवाला हनुमन्ता से चलना आरम्भ किया और महर्षि व्यास की तपोस्थली बिलासपुर को अपने पुण्य कार्यों का केन्द्र बनाया। उसमें उनका एक पड़ाव पंजाब का रोपड़ जिला भी रहा है। अद्‌भुत प्रबन्ध व्यवस्था शिल्पी, कुशल संगठनकर्ता, मितभाषी एवं निरन्तर कर्मशील रहना उनके सहज गुण रहे है। कितने ही कार्य कार्यकर्ताओं को उन्होंने अपने हाथों से गढ़ा और समाज के विविध क्षेत्रों में राष्ट्र कार्य के लिए प्रेरित किया। संगठन ने जो कार्य दिया उसे सहर्ष स्वीकार किया और लक्ष्य तक पहुंचाया। संघ कार्य के लिए योग्य कार्यकर्ता जुटाए, हिमाचल शिक्षा समिति के कार्य को गति दी, हिमाचल प्रदेश के राजनीतिक चिन्तन को बदलने का सफल प्रयास किया, धार्मिक आस्था के केन्द्रों को बढ़ाने में योगदान दिया व ठाकुर रामसिंह जी द्वारा नेरी में स्थापित ''ठाकुर जदगेव चन्द स्मृति शोध संस्थान'' इतिहास के क्षेत्र में अपना प्रतिमान स्थापित कर सके उसके लिए ठाकुर रामसिंह जी की इच्छा को ही उनका आदेश माना। स्वास्थ्य बिगड़ गया पर चेतराम जी का यात्रा पथ न रुका और चलते रहे। चलते-चलते शरीर शान्त हो गया और मां भारती को अपना सर्वस्व आहूत कर दिया।

झण्डवाला हनुमन्ता

झण्डवाला हनुमन्ता स्वर्गीय चेतराम जी का पैत्रिक गांव है। यहीं पर पिता राम प्रताप के घर माता दाखा देवी की कोख से कलियुगाब्द ५०५०, विक्रमी संवत् २००५, आषाढ़ कृष्ण १३ (३ अगस्त, १९४८) को जन्म लिया। राम प्रताप की कुल सात सन्तानों में चेतराम जी सहित पांच बहने तथा एक बड़े भाई गोपी राम है। झण्डवाला हनुमन्ता पंजाब प्रान्त के अबोहर जिला में पड़ता है। अबोहर से झण्डवाला २५ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह गांव राजस्थान और पाकिस्तान की सीमा पर पड़ता है। दोनों की दूरियां समान १४ किलोमीटर पर है। यहां के जन जीवन पर राजस्थानी परिवेष का असर है। वैसे तो जब हम झण्डवाला हनुमन्ता की इतिहास गाथा में जाते हैं तो चेतराम जी के जो प्रथम पूर्वज झण्डवाला में आकर बसे थे वह प्रथम पुरुष हनुमन्त ही थे। यह कोई दस पीढ़ी २५० वर्ष पूर्व की बात है। उनकी नेक कीर्ति से ही इस गांव का नाम झण्डवाला हनुमन्ता हो गया। वह राजस्थान के उदयपुर से यहां आकर बस गए थे। यहां की ८०% जनता कृषि कार्य में रत है। चेतराम जी के पिता राम प्रताप भी कृषक ही थे। गर्म जलवायु होने के कारण यहां कपास, किन्नू और गेहूं की खेती व्यापक स्तर पर

होती है।

शिक्षा

चेतराम जी की प्राथमिक शिक्षा निकट के प्राथमिक पाठशाला मोजगढ़ में हुई। मोजगढ़ हनुमन्ता से २ कि.मी. दूरी पर स्थित है। चेतराम जी शान्त चित व्यक्ति थे। ऐसा लगता नहीं कि बचपन में नटखट स्वभाव रहा होगा। प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त उन्हें छठी कक्षा की पढ़ाई के लिए जिला केन्द्र अबोहर जाना पड़ा। वहीं पर उच्च शिक्षा प्राप्त की। डी.ए.वी. कालेज अबोहर से कला स्नातक की परीक्षा उतीर्ण करने के उपरान्त उन्होंने वहीं पर एक सहकारी सभा में नौकरी करना प्रारम्भ कर दिया।

संघ कार्य में लग्न

चेतराम जी का सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से अपने विद्यार्थी काल में हो गया था। कालेज में श्रीमान् रामेश्वर जी (वर्तमान में उत्तर क्षेत्र प्रचारक प्रमुख) उनके मित्र बन गए थे। यह मित्रता बढ़ाने का काम चेतराम जी ने संघ प्रेरणा से किया था। वे श्रीमान रामेश्वर जी को संघ की शाखा में ले जाना चाहते थे। यह सस्मरण रामेश्वर जी ने उनकी श्रद्धाञ्जलि समारोह में १२ अगस्त २०१७ को बिलासपुर में सुनाया। उन्होंने बताया कि कालेज में जब हमारी मित्रता हो गई तो एक दूसरे के कमरे में भी आना-जाना शुरू हो गया था। अब चेतराम जी ने मुझे संघ की शाखा में चलने के लिए प्रेरित किया। अपनी पढ़ाई तथा संघ की ओर आकर्षण न होने के कारण मैंने चेतराम जी से कहा , ''भाई हमारी मित्रता पक्की है पर मैं आप की शाखा में नहीं आ सकता।'' एक बार संघ के छः उत्सवों में से शरद् पूर्णिमा का उत्सव आया। चेतराम जी ने मुझे उस उत्सव में आने की सूचना दी। मेरा भी मन कर गया। उत्सव पर खीर बनती है यह मुझे जानकारी थी। रात्रि को खेल, कविता, गीत होते हैं और उसके उपरान्त खीर बांटी जाती है जिसका अपने समाज में बड़ा महत्व है। बस उस उत्सव में जाना था और मैं संघ का स्वयंसेवक बन गया। तब से लेकर आज तक कार्य में लगा हूं।

विश्वनाथ जी की दृष्टि

स्वर्गीय विश्वनाथ जी उस समय अबोहर जिला में प्रचारक का दायित्व निर्वहन कर रहे थे। सहकारी नौकरी में जाने के बाद भी चेतराम जी की पूरी लग्न संघ कार्य में ही लगी थी। विश्वनाथ जी ने चेतराम जी का संघ कार्य के प्रति समर्पण भाव व निष्ठा देखी। उन्हें लगा कि नौकरी करने पर भी वे संघ कार्य को ही महत्त्व देते है। विश्वनाथ जी ने चेतराम जी से इस विषय पर चर्चा की कि क्यों न पूरा समय लगाकर संघ का ही कार्य करना प्रारम्भ करें। चेतराम जी को निर्णय करने में कोई देर न लगी और संघ के पूर्ण कालिक प्रचारक बन गए।

श्रीमान् चेतराम जी १९७१ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने। एक वर्ष वे मुक्तसर में नगर प्रचारक रहे। अगले वर्ष सन् १९७२ में उनको फाजिल्का तहसील में तहसील प्रचारक के नाते काम करने के लिए भेजा गया। एक साल फाजिल्का काम करने के बाद सन् १९७३ में उन्हें रोपड़ जिला प्रचारक का दायित्व दिया गया। उन्होंने सन् १९७३ से १९८२ तक ९ वर्ष रोपड़ जिला प्रचारक

के रूप में कार्य किया। श्री ज्ञान जी उस समय कीरतपुर शाखा के मुख्य शिक्षक थे। बाद में खण्ड कार्यवाह, जिला कार्यवाह तथा मा. संघचालक का दायित्व निभाते रहे। चेतराम जी द्वारा रोपड़ जिले में ६ वर्षों तक किए गए कार्य के विषय पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि चेतराम जी जो भी निर्णय लेते थे वह संगठन के हित का होता था। दूसरी बात जो भी कार्य करते वह अधिकार पूर्वक करते। कार्य करने और करवाने में कोई संकोच नहीं होता था। आपातकाल के दिनों वे पुलिस को चकमा देकर संघ कार्य करने में सफल रहे। उन्हीं दिनों की बात है जब सन् १९७६ में एक दिन वे ठाकुर रतन सिंह के घर पर थे। संघ पर प्रतिबन्ध लगा हुआ था। चेतराम जी को पकड़ने पुलिस साधारण वेश में आई। चेतराम जी भी लोई से अपना सिर ढक कर घर से छुप कर निकल पड़े थे। थोड़ी दूर पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। चेतराम जी ताकतवर इन्सान थे। उन्होंने पुलिस को इतने जोर का झटका मारा कि लोई तो पुलिस वालों के हाथ में रह गई पर चेतराम जी किधर निकल गए कोई पता न चल सका। ऐसी ही एक घटना मोरिन्डा की है। मोरिन्डा में चेतराम जी श्री अजीत कुमार जी के घर पर ठहरे हुए थे। सी.आई.डी. पीछे लगी हुई थी। पुलिस ने सादे वेश में घर की तलाशी शुरू करनी चाही। परिवार की सारी महिलाएं इक्कठीं हो गई और पुलिस को घर के अन्दर घुसने नहीं दिया। चेतराम जी को कब घर से गुप्त मार्ग से निकाल दिया कोई पता ही न चला और पुलिस को खाली हाथ लौटना पड़ा। आपातकाल के समय ही सरसा नंगल की पहाड़ियों में रेंजर की बरदी पहन कर वे घूमा करते थे। भेड़-बकरी चराने वालों से विविध प्रकार की जानकारियां प्राप्त करना और उनके साथ सम्बन्ध बनाकर रखना वे कुशलता से करते थे।

ज्ञान जी की दुकान और घर भण्डारी धर्मशाला के पास था। संघ कार्यालय धर्मशाला में था। संघ कार्यालय की चाबी उन्हीं के घर पर रहती थी। दिन में जितने भी मित्र बन्धु आते, सारे संघ कार्यालय में ही बैठकर विचार-विमर्श करते थे। चेतराम जी के साथ रोपड़ जिले में संघ कार्य को बढ़ाने में मास्टर रतन लाल जी का भी बड़ा सहयोग रहा है। रतन लाल जी १९४५ तक संघ के प्रचारक रहे थे। जे.बी.टी. करने के बाद वे अध्यापक बन गए थे।

चेतराम जी का सम्बन्ध घरों में अपने परिवार के वे सदस्य जैसा ही था। रसोई में जाकर स्वयं चाय बनना, सलाद काटना तथा जो भी हो रसोई कार्य में हाथ बटाना उनकी आदत थी। दो तीन बार किसी परिवार में जाने के बाद परिवार के सदस्यों को अपना बना लेते थे। उन्हें पशुओं से भी बहुत प्रेम था। देश में तथा पंजाब में नई-नई नस्ल की गाय आ रही थी। दूध भी अधिक देती थी। चेतराम जी अपने कार्यकर्ताओं को नई नस्ल की गायों को खरीदने के लिए भी प्रेरित करते थे।

चेतराम जी तैराकी के भी शौकीन थे। नहर पर अपने साथियों के साथ वे तैराकी करने जाते थे। मा. ठाकुर राम सिंह जी पंजाब के सह प्रान्त प्रचारक बन कर आए थे। वे भी तैराकी में रुचि करते थे। कई बार नेरी संस्थान में नहर पर तैराकी की चर्चा होती रहती थी।

कमला गांव का कांग्रेसी नेता

रोपड़ के पास एक कमला गांव है। वहां का एक कांग्रेसी नेता संघ वालों के प्रति दुर्भावना रखता था तथा संघ शाखाओं पर कोई न कोई टिप्पणी करता रहता था। वह मिट्टी के तेल के लिए परेशान रहता था। मिट्टी तेल डिपू से मिलता था। कई बार तो बिना तेल से ही आना पड़ता था। चेतराम जी ने विचार किया कि इस व्यक्ति को अपना बनाना चाहिए। चेतराम जी ने उसकी समस्या को समझा और उसे हल करने का प्रयास किया। 'नूरपुर वेदी' के श्री रामनाथ जी पूर्व में प्रचारक रह चुके थे। उनके पास मिट्टी का तेल का डीपो था और उनके डिप्पू में तेल की कोई कमी नहीं थी। चेतराम जी ने एक कार्यकर्ता की जिम्मेवारी उसे तेल उपलब्ध करवाने की जिम्मेदारी लगा दी। कांग्रेसी नेता प्रसन्न हो गया। एक बोतल को तरसने वाला अब तेल की कमी से मुक्त हो गया और वह आरएसएस का प्रशंसक बन गया।

रामरतन से वार्ता

८ सितम्बर, २०१७ को इतिहास संकलन योजना के प्रान्तीय सम्मेलन के निमित मैं बिलासपुर में था और संघ कार्यालय में ठहरना हुआ। उसी दिन चेतराम जी का भतीजा रामरतन भी बिलासपुर आया हुआ था। मुझे उन से वार्ता करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने बताया कि चेतराम जी जब घर आते थे तो हम उन से डरते थे। हम उन से भेंट करने से हिचकिचाते थे। जब वे घर के अन्दर होते तो हम बाहर निकल जाते थे। मैंने पूछा – ऐसे कैसे होता था? उनका उतर था – उनका आभा मण्डल ही ऐसा था कि उनके सामने बैठने की हमारी हिम्मत ही नहीं होती थी।

बड़े होने पर रामरतन ने एक स्कूल खोला। स्कूल खोलने के बाद चेतराम जी से निकटता बननी प्रारम्भ हो गई। फिर तो ऐसी निकटता हो गई कि मित्रों जैसा व्यवहार हो गया। उन्होंने संघ से प्रशिक्षण लेने की प्रेरणा दी। संघ का तृतीय वर्ष तक का प्रशिक्षण प्राप्त किया और संघ का दायित्व भी ग्रहण किया। रामरतन जी ने बताया कि उसके बाद तो चेतराम जी जो सलाह देते थे उसी का अनुसरण वे करते थे। चेतराम जी ने उनसे स्कूल का काम छुड़वाया और औषधियों का काम शुरू करवाया तथा आनार का बगीचा लगाया। रामरतन ने बताया कि चेतराम जी ने घर के कार्य में मदद की। जब भी घर आते हमारे पास ही आते थे।

गुप्त पत्र प्रचार

घटना उस समय की है जब जयप्रकाश नारायण जी जेल में बन्द थे। एक दिन चेतराम जी घर आए। उनके पास कुछ पत्रक थे। जो उन्होंने छुपा कर रखे हुए थे। जब वह शाम को घर से बाहर गांव में गए हुए थे उस समय उनके पिता जी ने वे पत्रक देख लिए। चेतराम जी को घर आकर पता चला कि पिता जी ने पत्रक पढ़ लिया। उस रोज प्रातः चेतराम जी ४ बजे बिना बताए ही पत्रक लेकर चले गए। किधर गए कुछ पता नहीं, अन्यथा बिना बताए वे घर से कभी जाते नहीं थे। यह घटना रामरतन जी ने बताई।

हिमाचल आगमन

सन् १९८२ में चेतराम जी का स्थान्तरण रोपड़ जिला प्रचारक से हिमाचल हो गया। बिलासपुर जिला प्रचारक का दायित्व मिला और उनका केन्द्र बिलासपुर हो गया। ३५ वर्षों तक चेतराम जी का केन्द्र बिलासपुर ही रहा। कई तरह के उतार चढ़ाव आए सभी का सामना करते हुए मां भारती की सेवा का व्रत अटूट बना रहा। हिमालय की वादियों में काम करना कठिन तो था ही मगर चेतराम जी की कार्यनिष्ठा अडिग थी। मण्डी विभाग का काम साथ जुड़ने से कार्य विस्तार की संभावनाओं को आगे बढ़ाया।

अध्यपाकों की टोली

संघ कार्य के दृढ़ीकरण को ध्यान में रखते हुए उन्होंने सरकारी स्कूलों में बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापकों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इन अध्यापकों में श्री अच्छर सिंह, मनसाराम, लेखराम, मास्टर भूपेन्द्र बसन्त राम आदि अनेक नाम हैं, जिन्हें बिलासपुर जिले के संघ कार्य की रीढ़ माना जा सकता है। अधिकांश इन में जेबीटी अध्यापक थे। बसन्त राम के पुत्र अशोक कपिल को आज भी याद है कि चेतराम जी नीली कमीज आधी बाजू की पहन कर घर आए थे। वह उस समय चौथी कक्षा में पढ़ते थे। हिमाचल प्रदेश छोटा प्रदेश होने के कारण यहां सरकारी कर्मचारियों पर सरकार की टेड़ी नजर रहती आई है इसलिए स्थानान्तरण हो भी जाए तो अपने ही जिले में हो। इन अध्यापकों ने स्थानन्तरण को दण्ड न मानकर एक सुअवसर माना। संघ कार्य एक जगह रहकर तो किया नहीं जा सकता। उसके लिए भ्रमण आवश्यक है। स्थानान्तरण होने से घर से दूर रहकर स्कूल में बच्चों की पढ़ाई के लिए अतिरिक्त समय देना तथा इन्हीं बच्चों में देशभक्ति का भाव संघ की शाखाओं के माध्यम से देश-धर्म की रक्षा के लिए जीवन लगाना चेतराम जी की प्रेरणा से संभव हो पाया। चेतराम जी जब इन अध्यापकों से मिलने जाते तो ये चेतराम जी का परिचय अपने साथी अध्यापकों से भी करवाते थे। बच्चों के अभिभावक तथा अध्यापक सभी प्रसन्न रहते थे।

जिला बैठकों का क्रम

किसी भी कार्य की रीड़ उसकी निरन्तरता होती है। यह पद्धति चेतराम जी ने भी अपनाई। उन्होंने अपने केन्द्र को कार्य का केन्द्र मानकर वहां की जिला बैठकें और टोली बैठकों आदि पर ध्यान दिया। संख्या की चिन्ता न करते हुए मासिक बैठक अनिवार्य रूप से हो। ऐसा अनेक बार हुआ कि जिला कार्यवाह मनसा राम जी और चेतराम जी ही बैठक में होते। रात्रि को कार्यालय में अपने कार्य की समीक्षा करनी और दूसरे दिन शाखा के बाद अपने अपने स्थान पर निकल जाना। इसी निरन्तरता से बिलासपुर में संघ कार्य ने भी गति पकड़ ली। खण्डों से लेकर मण्डल स्तर कार्य बढ़ता चला गया।

बिलासपुर में प्रान्त बैठकें

मैं सन् १९९० में संघ कार्य के लिए प्रचारक निकला। मैं रामपुर का कार्य देख रहा था। उस वक्त मैंने देखा कि जब भी कोई प्रान्त बैठक होनी होती तो उसका स्थान बिलासपुर तय होता था। एक तो बात समझ में आती थी कि पूरे हिमाचल का केन्द्र बिलासपुर है पर बिलासपुर के अतिरिक्त भी

बहुत स्थान है जहां बैठकें हो सकती है। दो-तीन साल काम करने के बाद समझ में आया कि बैठक तो अन्य स्थानों पर भी हो सकती है, पर प्रबन्ध व्यवस्था के लिए योग्य टोली की भी आवश्यकता होती है। बिलासपुर में पिछले १० वर्षों में कार्यकर्ता निर्माण का कार्य हुआ था जिससे समय देने वाली और आवश्यक संसाधनों को जुटाने वाली टोली थी। तभी ये बैठकें बिलासपुर में होती थी और इस सबके पीछे चेतराम जी का मुख्य योगदान था।

विद्यार्थी कार्य पर ध्यान

राजेन्द्र जी संगठन मन्त्री 'हिमाचल शिक्षा समिति' से बात करने पर पता चला कि जब वे १९८२ में ६वीं कक्षा में पढ़ते थे, उसी समय वे चेतराम जी के सम्पर्क में आ गए। संघ की शाखा में आना जाना शुरू हो गया तथा संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण भी करवा दिया। १०वीं कक्षा में जाते-जाते तो दो मास की छुट्टियों में विस्तारक भी भेज दिया। ऐसे अनेक उदाहरण है। बिलासपुर के ही स्वर्गीय अनिल जी कालेज में पढ़ते थे। उनसे सम्बन्ध बना लिए और कालेज विद्यार्थियों में काम खड़ा किया। यह क्रम सभी क्षेत्रों में निरन्तर आगे बढ़ता रहा।

सन् १९८२ में किस्मत जी 6वीं कक्षा में पढ़ते थे। श्री लेखराम जी उनके अध्यापक थे और संघ की शाखा में जाते थे। किसमत जी शाखा जाते थे। किस्मत जी को टाई फाईड हो गया। लेखराम के साथ चेतराम जी उन्हें देखने आ गए। चेतराम जी का अभी तक परिवार के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था। चेतराम जी और लेखराम जी किसमत जी के पास काफी देर तक बैठे। किसतम जी ने बताया कि मैं उस घटना से बहुत प्रभावित हुआ और सदैव मुझे यह ध्यान रहता है कि एक स्वयंसेवक का दूसरे स्वयंसेवक के साथ क्या सम्बन्ध रहता है।

हिमाचल में वर्गों का आयोजन

१९८२ से पूर्व हिमाचल प्रदेश में संघ शिक्षा वर्ग हुए ही नहीं थे। प्राथमिक वर्गों का प्रचलन भी इस के बाद प्रारम्भ हुआ। संघ शिक्षा वर्ग और प्राथमिक वर्ग पंजाब प्रान्त में हुआ करते थे। कार्यकर्ता और व्यवस्था पक्ष को संभालने वाले कार्यकर्ताओं की पूर्ति इन नवीन स्वयंसेवकों एवं कार्यकर्ताओं से पूरी होने लगी। यह तभी संभव हुआ जब कार्यकर्ता की टोली निर्मित हुई। पूर्व प्रचारक, श्री बलवीर राणा के साथ बात-चीत से पता चला कि चेतराम जी जहां भी जाते थे वहीं वे आत्मीय सम्बन्ध बना लेते थे। संघ की भाषा में यदि कहा जाए तो उनका सम्पर्क चूल्हे तक रहता था।

अनुशासन प्रिय व्यक्तित्व

चेतराम जी अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। इस मामले में वे कठोर भी थे। समझौतावादी नहीं थे। आत्म प्रशंसा, परदे पर आना व मंचों पर बैठना आदि बातें उनके स्वभाव में नहीं थी। **जो जैसा कहा वैसा करना** उन्हें प्रिय था। बीच की गड़बड़ पसन्द न थी। समय के पाबन्द थे। **जिस कार्यकर्ता को जो काम दिया, उसे ही वह काम करना चाहिए।** आगे देने की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए। यदि ऐसी कोई विवशता आ ही गई, तो उसकी जानकारी उपयुक्त व्यक्ति तक मिल जाए इस बात का ध्यान रहना चाहिए। पांवटा साहिब में संघ शिक्षा वर्ग लगा हुआ था। पूजनीय सरसंघचालक माननीय सुदर्शन जी

भी संघ शिक्षा वर्ग में पधारे हुए थे। वर्ग की सारी व्यवस्था चेतराम जी के पास थी। बाकी प्रबन्ध व्यवस्था के लिए टोली बनी हुई थी। किस से कौन सा कार्य करवाना है इस बात का वे पूरा ध्यान रखते थे। नाहन के पुराने स्वयंसेवक वेद जी के मन में आया कि मैं स्वयंसेवकों को आम दे आऊं। उन्होंने दो पेटियां आम की गाड़ी में डाली और संघ शिक्षा वर्ग में ले आए। जिस समय वे आम छोड़ने गए उस समय चेतराम जी वहां नहीं थे। किसी अन्य कार्यकर्ता ने आम संभाले। जब चेतराम जी को पता चला कि कोई स्वयंसेवक आम छोड़ गए हैं तो उन्होंने प्रबन्ध व्यवस्था वाले कार्यकर्ताओं को पूछा कि उन्हें आम देने को किस ने कहा? किसी का कोई उत्तर न था। तब उन्होंने कार्यकर्ताओं को समझाया कि कोई भी वस्तु लेनी है तो वह हमारी व्यवस्था से ही हो क्योंकि कितनी संख्या हमारे वर्ग में है, सबको बराबर मिल जाए उसका हिसाब रखना होता है। किसी का भी मन कर जाए और वह कुछ भी दे जाए उससे सारे वर्ग की व्यवस्था बिगड़ जाएगी। ऐसी छोटी-छोटी बातों का वे ध्यान रखते थे और उसके प्रति सदैव जागरूक रहते थे।

दिनचर्या

चेतराम जी का प्रिय विषय था – दिनचर्या। बीस दिन के प्रशिक्षण वर्ग में शिक्षार्थियों को किन-किन बातों का अभ्यास करना है, उस बात को वे बड़े सरल ढंग से समझाते थे। लम्बे समय तक संभाग व प्रान्त कार्यवाह रहने के कारण उनके मस्तिष्क में हर बात रहती थी। कापी पैन का प्रयोग तो वह नाम मात्र के लिए कभी कभार ही किया करते थे। पूरे वर्ग में अति सीमित बात करते हुए सभी व्यवस्थाओं का संचालन करते थे।

विद्यार्थियों की संभाल

घुमारवीं के विवेक ने संघ शिक्षा वर्ग किया तो उस समय मैं उनका गण शिक्षक था। गण शिक्षक का काम अपने गण का सब तरह से ध्यान रखना होता है। जब भी मैं गण शिक्षक रहा मेरे पास सबसे छोटी आयु के शिक्षार्थी रहते थे। इन विद्यार्थियों में संघ कार्य का जोश भी सिर चढ़ कर बोलता है। बस शाखा-शाखा। ऐसा ही जोश विवेक को भी चढ़ा। चेतराम जी की नजर विद्यार्थियों पर बनी रहती थी। तीन-चार महीने से चेतराम जी देख रहे थे कि विवेक का ध्यान सारा शाखा पर है और उसकी पढ़ाई पिछड़ती जा रही है। चेतराम जी विवेक के घर गए और कहा, ‘‘तू कल से शाखा नहीं जाएगा। पहले अपनी पढ़ाई की तैयारी कर। यदि तू अच्छे नम्बर लेकर पास नहीं हुआ तो घर वालें और अड़ोसी-पड़ोसी क्या बोलेंगे – संघ की शाखा में यह सिखाया जाता है।’’ विवेक को ऐसी उम्मीद न थी कि चेतराम जी मेरी पढ़ाई के बारे में इतनी निकटता से ध्यान रखते हैं।

बिलासपुर में गौशाला

सन् १९९० में चेतराम जी प्रचारक जीवन से मुक्त हुए। अब क्या करना? गौशाला खोलनी है। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर राम सिंह जी ने उन्हें अपने गांव झण्डवीं, हमीरपुर में गौशाला खोलने की सलाह दी। वहां पर ठाकुर जी की बहुत बड़ी जमीन पड़ी हुई थी। पर, बिलासपुर में काला बाबा के नाम से प्रसिद्ध बाबा को जब यह पता चला कि चेतराम जी

गौशाला खोलना चाह रहे हैं, तो उन्होंने चेतराम जी को अपने पास बुलाया और कहा, ''तुम गौशाला मेरे यहां खोलेगे। चेतराम जी के पास कहने को कुछ नहीं था। काला बाबा के बारे में यह मान्यता प्रसिद्ध थी कि बाबा जी ने जिसे जो कुछ बोल दिया वह करना है और जो उसके विरुद्ध गया तो बस समझों वह जीवन में सफल न हुआ। चेतराम जी ने पूरे मनोयोग से गौशला का कार्य प्रारम्भ किया। दूध हाथों हाथ बिकता था। लोग पंक्तियों में खड़े रहते थे। प्रतिदिन शाखा जाना व संघ कार्य उसी प्रकार से करना। संघ से कोई दूरी नहीं। बस अब संघ के लिए पूरा समय नहीं, पर जितना समय है उतना तो लगाना ही है।

व्यवसायी अनिल से सम्बन्ध

बिलासपुर शहर में ही रहने वाले छात्र अनिल चेतराम जी के संपर्क में आए। पढ़ाई के साथ संघ कार्य में पूरे मनोयोग से लग गए थे। पढ़ाई पूरी होने के बाद अपना व्यवसाय शुरू किया। चेतराम जी के साथ सम्बन्ध घनिष्ठ होते गए। वे संघ का कार्य पूरी मेहनत से करते। अनिल को लगा कि चेतराम जी का पूरा मन तो संघ कार्य में ही है और उपर से अधिकारियों का दबाब दायित्व लेने के लिए बार-बार पड़ता जा रहा था। इस में अनिल ने एक रास्ता निकाला। उसने चेतराम जी को कहा जितना पैसा आप के पास है उसे मुझे दे दो। हम दोनों मिलकर एक ट्रक डालेंगे। आप संघ कार्य करने के लिए स्वतन्त्र हो जाओगे और ट्रक का काम मैं देखलूंगा। चेतराम जी के पास लगभग एक लाख था वह उसे दे दिया। गौशाला अपने भतीजे रामरतन को चलाने के लिए कहा। पर वह इस काम को संभाल न पाया गौशाला बन्द हो गई और चेतराम जी संघ कार्य करने के लिए स्वतन्त्र हो गए। इधर संघ का दायित्व मिल गया। गाड़ी का काम ऐसा बढ़ा कि **केशव ट्रेडिंग कम्पनी** बन गई। इन दोनों के साथ तीसरे सांझेदार सरदार गुरदयाल भी किरतपुर से जुड़ गए। चेतराम जी तो हस्ताक्षर करने वाले ही थे बाकि सारा काम वे दोनों ही देखते थे। संघ कार्य के लिए चाहे जितना भी प्रवास करना होता उसका सारा व्यय अपनी आय से ही किया करते। पैसा आने पर व्यय करने से नहीं घबराते थे। अनिल की मृत्यु एक दुर्घटना में होना चेतराम जी के लिए एक असहनीय अघात था। अनिल जिला कार्यवाह रहते हुए उसी गति से काम करते थे जिस तरह चेतराम जी को उन से अपेक्षा रहती थी।

विविध आयामों पर ध्यान

संघ कार्य के साथ ही धीरे-धीरे विविध क्षेत्रों का कार्य भी बढ़ने लगा। कार्यवाह होते हुए भी वे प्रचारक के समान संघ कार्य के लिए समय देने लगे। मुझे ऐसा दिखाई दिया कि उनकी विशेष रुचि शिक्षा क्षेत्र में बढ़ावा देने में रही है। अखिल भारतीय स्तर पर शिक्षा का काम ''विद्या भारती'' करती है। प्रदेशों में उसकी अलग समितियां होने के कारण उनके अलग-अलग नाम है हिमाचल प्रदेश में ''हिमाचल शिक्षा समिति'' है। इसके अन्तर्गत प्रथम विद्यालय सिरमौर जिला के पांवटा साहिब में प्रारम्भ हुआ। प्रदेश में इस कार्य का विस्तार हो इसके लिए विशेष प्रयास किए जाने का बीड़ा चेतराम जी ने उठाया। बिलासपुर केन्द्र होने के कारण बिलासपुर को सुदृढ़ किया। कन्या उच्च विद्यालय, बाल उच्च विद्यालय तथा इसके अतिरिक्त दो छोटे विद्यालय बिलासपुर नगर में ही खोल दिए गए। जिले में

भी विद्यालयों का जाल बिछ गया। साथ-साथ प्रदेश के दूर दराज के क्षेत्रों में कार्य को बढ़ाने की योजना बनी। आज प्रदेश के हर जिला तथा तहसील केन्द्रों पर हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा संचालित संस्कार देने में सक्षम विद्यालय कार्य कर रहे हैं। चेतराम जी इन कामों में इस बात का विशेष ध्यान देते थे कि विद्यालय की कमेटी में कैसे लोग आएं, भवन और जमीन की व्यवस्था किस प्रकार उस कमेटी से करवाई जाए तथा योग्य 'आचार्य दीदियां' पढ़ाने के लिए आगे आएं। प्रशिक्षण शिविरों की व्यवस्था कैसे हो यह सारा कार्य चेतराम जी देखते थे। आज हिमाचल शिक्षा समिति स्वयं के व्यवस्थित कार्य से संस्कार व शिक्षण में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सक्षम हुई है।

राजनीतिक समन्वय

संघ कार्य सर्वस्पर्शी है। समाज का स्वांगीण विकास राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य है। राजनीति अछूत नहीं है, हां उस कार्य के साथ कितनी निकटता बनाकर चलना है, इस बात का ध्यान एक अनुशासित व्यक्ति ही रख सकता है। कहीं उस का अपना मन ही राजनीति का स्वाद देने के लिए तो नहीं डोल रहा है। घटना हिमाचल प्रदेश में भाजपा को संगठन मन्त्री देने की है। राजेन्द्र जी जो वर्तमान में हिमाचल शिक्षा समिति के प्रान्त संगठन मन्त्री हैं, वे जब किसी ने भाजपा में जाने हेतु पूछा तो यह बात उन्होंने चेतराम जी को उनकी राय लेने के लिए बताई। इस पर राजेन्द्र जी को चेतराम जी ने झाड़ दिया कि भाजपा में क्यों जाना है, शिक्षा क्षेत्र में काम कर रहे हो उसे ही देखो। विविध क्षेत्र के विविध आयामों में संभाग कार्यवाह और प्रान्त कार्यवाह रहते हुए यह महत्वपूर्ण कार्य चेतराम जी के पास रहा। सभी स्वयंसेवक चेतराम जी के पास जाने से कतराते थे और स्वार्थियों की तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती थी। चेतराम जी जमीनी हकीकतों के जानकार थे। इसलिए मनघड़न्त कहानियां उनके सामने चलती नहीं थी। जो सुनाते भी थे उनके बारे में उन्हें जानकारी रहती थी। कब किस बात के बारे में समझाना है, यह परिस्थिति देखकर उसे ठीक कर लेते थे। चेतराम जी का प्रभाव ऐसा था कि उनके पास किसी एक पार्टी या दल के लोग ही नहीं बल्कि सभी दलों के लोग मिलने के लिए आते थे। चेतराम जी की यह पक्की बात थी कि जिसे जो बचन दे दिया उसे पूरा करने के लिए वे दृढ़ संकल्प रहते थे तथा पीछे नहीं हटते थे। हां, संगठन ने ही यदि कोई ऐसा विचार किया है कि पीछे हटना है तभी पीछे हटते थे।

कर्मचारी संगटनों की दिशा और दशा

हिमाचल प्रदेश में अधिकांश पढ़ा लिखा वर्ग सरकारी कर्मचारी है। वह हिमाचल प्रदेश की राजनीति को प्रभावित करता आया है। उसका सम्बन्ध शहरी व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में रहता है तथा वह देश की विविध गतिविधियों की भी जानकारी रखता है। उस वर्ग का एक अपना नजरीया है। राजनीतिक लोग, कर्मचारी वर्ग को विविध प्रकार के प्रलोभन देकर अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं। लोग कर्मचारियों को राजनैतिक उत्पीड़न से मुक्ति और उनके अधिकारों की रक्षा कर्मचारी संगठनों का महत्वपूर्ण विषय है। कर्मचारी संगठनों व सरकार के बीच समन्वय का दायित्व चेतराम जी के पास था। उनका हमेशा प्रयास रहा कि यह संगठन अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु मात्र सत्ता के गलियारों तक ही

सीमित न रहकर समाज व राष्ट्र हित में भी योगदान देने में समर्थ हों। केवल स्वार्थ पूर्ति के लिए ही सरकारों का ध्यान आकर्षित न करके राष्ट्र के नीर-क्षीर का भी ध्यान रखें। इस दिशा में उनके द्वारा किए गए प्रयास कर्मचारी नेताओं की सोच एवं कार्यशैली में बदलाव आया और उसके सुखद परिणाम भी सामने दिखाई देने लगे।

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में अति सम्मानीय व्यक्तित्व, इतिहास पुरुष श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुत ऊंचा रहा है। ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर उन्हीं के प्रयासों का प्रतिफल है। पर इस कार्य को नींव के पत्थर की तरह करने वाले व्यक्तित्व का नाम चेतराम जी है। चेतराम जी एक तो प्रान्त कार्यवाह थे दूसरे ठाकुर जी के प्रिय। ठाकुर साहब की इच्छा ही चेतराम जी के लिए आदेश होता था। ठाकुर जी ने जब हिमाचल प्रदेश में आखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के विस्तार हेतु विचार किया तो यह कार्य उन्होंने श्री चेतराम जी को ही सौंपा। मैं जब रामपुर में विभाग प्रचारक था, उस समय उस विभाग में समितियां बनाने का काम किया था। उसकी पूछ-ताछ चेतराम जी करते थे। आयु अधिक होने के कारण ठाकुर जी इतिहास संकलन योजना के कार्य से २००३ में मुक्त हुए। ठाकुर जी तो बैठने वाले व्यक्ति न थे। उन्होंने हिमाचल प्रदेश में इतिहास के स्थाई कार्य के लिए जमीन देखने की बात की। तब चेतराम जी और तत्कालीन मुख्यमन्त्री मा. प्रेमकुमार धूमल जी के प्रयासों से यह स्थान निश्चित किया गया। शोध संस्थान का आर्थिक पक्ष चेतराम जी ही देखते थे। अक्तूबर, २००५ में शोध संस्थान में प्रचारक का कार्य मुझे सौंपा गया। सन् २०१० तक ठाकुर जी के रहने तक मैं पूरी तरह निश्चिन्त रहता था। जो ठाकुर जी कहेंगे वहीं काम करना है। केन्द्रीय नेतृत्व का भी यही निर्देश था जैसा ठाकुर जी कहें वैसा कार्य करना। ठाकुर जी के जाने के बाद चेतराम जी से सारी चर्चा व बात होती थी। वह हर बात को बड़े धैर्य से सुनते और समाधान निकालते थे।

मेरी निकटता

चेतराम जी से मेरी निकटता नेरी आने पर ही बनी। जुलाई २००४ में रामपुर विभाग से बिलासपुर विभाग में आ गया। मेरा केन्द्र हमीरपुर हुआ। शोध संस्थान का कार्य उस समय प्रगति पर था। २१ मार्च २००५ को वर्ष प्रतिपदा के दिन तत्कालीन सरकार्यवाह व वर्तमान मा. सरसंघचालक ने श्रीमती उत्तम देवी कपूर भवन का उद्घाटन किया। उस दिन बड़ी वर्षा हुई। मंच को उठाकर अन्दर ले जाना पड़ा। सब जगह कीचड़ ही कीचड़ था। बड़ा भव्य कार्यक्रम हुआ। माननीय भागवत जी भी प्रसन्न हुए। जाते समय हम उन्हें गाड़ी में बिठाने के लिए गेट तक गए। माननीय भागवत जी ने कहा – भाई यह भवन तो बन गया है पर यहां रहेगा कौन? मैंने कहा, 'ये तो आप और ठाकुर जी ही जानते हैं। ठाकुर जी प्रचारक तो मांग ही रहे थे अगले वर्ष २००५ अक्तूबर में मैं नेरी आ गया। यहीं से चेतराम जी के साथ प्रगाढ़ मित्रता का सिलसिला शुरू हुआ। वैसे तो शिमला में होते हुए

भी हमारी अच्छी बात-चीत होती थी, पर यहां हम एक दम निकट आ गए। कई बार कुछ व्यक्तियों के बारे में हमारी मत भिन्नता रहती थी, पर भिन्न-भिन्न कार्य के लिए उसी प्रकृति के कार्यकर्ता की आवश्यकता होने के कारण कई विषयों पर सांमजस्य बिठाना होता था। हृदय से चेतराम जी अति कोमल व्यक्ति थे। सेवा भाव उन में कूट-कूट कर भरा हुआ था। जब चेतराम जी को कोई विषय पूरी तरह से बता दिया जाता था तो वे किस गति से काम करते थे इस बात का पता तभी लगता था जब काम पूर्ण हो जाता था। नेरी के कार्य के साथ उनका बड़ा लगाव था। ठाकुर जी के जाने के बाद तो वे दो तीन दिन तक भी नेरी संस्थान में ही ठहर जाते थे। पहले वह अधिक समय रुकते नहीं थे।

निदेशक मण्डल बैठक

श्रद्धेय ठाकुर जी के स्वर्गवास के उपरान्त निदेशक मण्डल बैठक संस्थान के प्रांगण में ही हुई। चेतराम जी भी बैठक में उपस्थित थे। एक-एक करके सदस्य ठाकुर जी के द्वारा किए गए कार्यों की चर्चा कर रहे थे। ठाकुर जी के कार्यों की चर्चा ऐसे चल रही थी जैसे ठाकुर जी ने अपने जीवन में निजि कार्य किए हो व समाज व शोध संस्थान से कोई सरोकार न है। अब चेतराम जी से रहा न गया। उन्होंने कहा – ''ये तुम सब क्या बात कर रहे हो। यह ठाकुर जी का कार्य है या राष्ट्र का है। ठाकुर जी ने अपना जीवन किस कार्य के लिए लगाया। यह शोध संस्थान किस कार्य के लिए खोला? ठाकुर जी तो अपना कार्य पूरा करके चले गए हैं। अब तुम क्या करने वाले हो यह बताओ, बाकी की बातें बन्द करो।'' उसके बाद सभी को अपनी गलती का अहसास हो गया और उनकी सोच भी बदल गई।

मनोविनोदी व्यक्तित्व

चेतराम जी के साथ खूब हंसी मजाक होता था। जब कभी वे एक-दो दिन के लिए संस्थान में आते तो हम शाम को ही उन्हें कह देते सुबह नाश्ता आप के हाथों का बना खांएगे। एक बार एक शिक्षा वर्ग में चेतराम जी भोजनालय का काम देख रहे थे और मैं औषधालय की व्यवस्था देख रहा था। मैंने पूछा– चेतराम जी नाश्ते मैं क्या बना है? वह बोले ''मंगलू बना है'' मैंने पूछा ''यह मंगलू क्या है''। ''अरे भाई आज मंगलवार है अतः नमकीन दलिया और रात की बची रोटियों का चूरमा बना है''। उपमा चेतराम जी बड़े शौक से बनाते थे और हम बड़े शौक से खाते थे।

चेतराम जी और ठाकुर रामसिंह जी

जैसा की पूर्व में वर्णन आया कि चेतराम जी का सम्बन्ध श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह जी से पिता-पुत्र से भी बढ़कर था। ठाकुर जी को ऊंचा सुनाई देता था। इस लिए कई बार किसी विषय को समझाना मुश्किल पड़ जाता था। एक बार ऐसा ही हुआ। चेतराम जी उन्हें एक विषय को समझाने लगे। पर ठाकुर जी उस बात को पकड़ ही नहीं रहे थे। सुबह नाश्ते के बाद फिर वहीं विषय शुरू हुआ। ऊंचे स्वर में बातचीत हो रही थी। मैं अपने काम में व्यस्त था। अन्दर से उठकर दोनों अलग-अलग बैठे थे। चेतराम जी गेट की ओर चारपाई पर लेट के धूप सेंक रहे थे और दूसरी ओर ठाकुर साहब धूप में कुर्सी पर बैठे धूप सेंकते हुए अपनी पुरानी स्वेटर को ब्रश से साफ भी किए जा रहे थे। दोनों शान्त। चेतराम जी ने उन्हें पूरी बात बताई। उसी दिन ठाकुर जी ने दिल्ली जाना था और चेतराम जी ने

बिलासपुर! ठाकुर जी को वह विषय समझाना जरूरी था। क्या किया जाए? मैंनें कहा, 'ठाकुर जी को कीरतपुर से ट्रेन में बिठा देंगे और आप को बिलासपुर छोड़ देंगे। इस बीच हमें समय मिल जाएगा। बात कर लेंगे। चेतराम जी ने कहा ''ठीक है, ऐसा ही करो''। मैं ठाकुर जी के पास गया और उनके हाथ से स्वेटर और ब्रश लेकर स्वेटर को साफ करते-करते बात करने लगे। सारी बातें होने के बाद मैंने कहा, ''ठाकुर जी चेतराम जी को बिलासपुर छोड़ते हुए कीरतपुर निकल जाएंगे और मैं आपको बिठाकर ऊना आ जाउंगा। क्या ऐसा ठीक रहेगा''। ''हां ठीक रहेगा'' उन्होंने कहा। ठाकुर जी ने अपना सामान तैयार किया। दोपहर का भोजन किया और बातें करते-करते बिलासपुर पहुंच गए। माहौल ठण्डा हो गया था और एक मिनट में ही पूरी बात सरलता से सुलझ गई। बिलासपुर में जलपान करने के बाद ही हम आगे निकले।

प्रान्त प्रचारकों से सम्बन्ध

चेतराम जी को संभाग कार्यवाह और प्रान्त कार्यवाह के रूप में क्रम से श्रीमान महावीर जी, श्रीमान कश्मीरी लाल जी, श्रीमान प्रेम कुमार जी, श्री श्रीनिवास मूर्ति और श्रीमान बनवीर जी के साथ काम करने का अवसर मिला। श्रीमान कश्मीरी लाल जी जब संभाग प्रचारक आए उस समय में शिमला में ही था।

कश्मीरी लाल जी बड़े रचनाकार हैं। विषयों को खोलना और खुलवाना उनकी बड़ी कला है। चलते-चलते चुटकुले भी बनाते थे और उन्हीं में से गहरे विषय भी निकालते हैं। कोई भी कठिन विषय आता तो उन्होंने उसे सुलझाने के लिए चेतराम जी को दे देना। कोई नया प्रयोग करना उसे चेतराम जी को सौंप देना। मैंने उन्हें ऐसे अनेकों विषयों को सुलझाते हुए देखा है। कांगड़ा संघ शिक्षा वर्ग में डॉ. भारत भूषण जी वर्गाधिकारी थे। वर्गाधिकारी, प्रान्त कार्यवाह और प्रान्त प्रचारक का नियमित रूप से दिन में २-३ बार बैठना होता है। मैं उस वर्ग में नहीं था। वर्ग समाप्ति के बाद जब डॉ. भारत भूषण जी ने मुझे अपने अनुभव सुनाए तो उन्होंने कहा कि सारी बातें समझ आई पर ये दोनों आमने-सामने बैठकर क्या बातें करते थे इस का मुझे कोई पता नहीं चलता था। मुझे खूब हंसी भी आई, क्योंकि मैं दोनों की बैठकों में बहुत बार रहा हूं। संगठन की बातों के अतिरिक्त बात क्या करनी।

श्रीमान् प्रेम कुमार जी हिमाचल में प्रथम प्रान्त प्रचारक आए। वह बड़े प्रखर स्वभाव के हैं। हिमाचल की कार्यशैली विनम्रता लिए हुए हैं। कार्य को देखना, समझना फिर करना। जो कर न सके उसके बारे में कहना नहीं। मेरा केन्द्र शिमला में ही था। धीरे-धीरे प्रेम जी ने हिमाचल को समझना शुरु किया और जल्द ही चेतराम जी और प्रेम जी का सामजस्य बड़े गजब का बैठा। प्रेम जी ने अपनी मेहनत और निष्पक्षता से सब के दिलों में वास कर लिया। चेतराम जी जब बीमार रहने लगे तो उन्होंने मुझे कहा कि अपनी सारी बात प्रेम जी से कर लिया करो। वह जो भी बोलेंगे, सही होगा। उन्हें प्रेम जी पर इतना विश्वास था। श्रीमान् श्रीनिवास जी को थोड़ी भाषा की समस्या भी थी। श्रीमान बनवीर जी के आने पर तो वे थोड़े समय ही प्रान्त कार्यवाह रह पाए। बनवीर जी भी उन्हीं के परामर्श से अपने

कार्य को अंजाम देते थे।

स्वास्थ्य बिगड़ता गया

एक दिन हम दोनों श्री प्यार चन्द परमार जी के घर से नेरी में नाश्ता करके आ रहे थे। मैंने साथ चलते-चलते उनके चलने का ढंग देखा। जैसे एक छोटा बच्चा उछल-उछल कर पांव को रखता है उस तरह से चल रहे थे। मैंने कहा, 'चेतराम जी आप के चलने का अन्दाज मुझे ठीक नहीं लग रहा। आप सहज न चलकर कुछ उछल-उछल कर चल रहे हो। तो बोले, ''लो देखो अब मैं कैसा चल रहा हूं।'' चल तो फिर भी वह उछल-उछल कर ही रहे थे पर अब वे कदम लम्बे लेने लगे थे। उन्होंने मेरा हाथ जोर से पकड़ा और कहा ''बताओ मेरे में जोर है''। मैंने कहा, ''हां आप में जोर तो है पर आप को अस्पताल में दिखाना ही पड़ेगा।'' लुधियाना में मेरी बात श्रीमान कश्मीरी लाल जी से हुई। तीन दिन बाद जब उनकी रिपोर्ट आई तो आसाध्य रोग पार्किनसन नाम की बिमारी से ग्रसित पाए गए जिसमें शरीर तो ठीक दिखता है पर धीरे-धीरे मस्तिष्क अन्य अंगों को सूचना देना बन्द कर देता है।

सहयोगी की आवश्यकता

सन् २०१२ में उन्हें सहयोगी की आवश्यकता पड़ी। घुवारवीं निवासी राकेश २००६ से नेरी में हमारे साथ संस्थान की रसोई और अन्य व्यवस्था का काम अपने घर की तरह देख रहा था। काम की भी गहरी समझ थी। हिमाचल शिक्षा समिति के वर्गों में बोटी का काम करता था। चेतराम जी उसे नेरी ले आए थे। एक सप्ताह जब हमें नेरी में रहते हो गया तो मैंने कहा – राकेश, जरा यह सब्जी इस प्रकार से बनाना। राकेश कुमार ने कहा, –''चेतराम जी मुझे ५00 लोगों का खाना बनाने की आदत है, दो लोगों का नहीं''। हम दोनों जोर से हंसे। मैंने कहा – ''राकेश ऐसा कर तू रोज ५०० लोगों की रोटी बना लिया कर और हम दोनों खा लिया करेंगे।'' कुछ ही समय में बड़े अच्छे से उसने संस्थान में लोगों के आने-जाने की सारी व्यवस्था सीख ली थी। उसका मन शुद्ध और पवित्र था और लालच तो लेश मात्र भी नहीं। सेवा भाव कूट-कूट कर भरा हुआ। चेतराम जी को एक सहयोगी की आवश्यकता हमारी प्राथमिकता थी। राकेश को चेतराम जी के सहयोग हेतु नियुक्त कर दिया। राकेश ने चेतराम जी को ऐसे सम्भाला जैसे उनके अपने पिता हो। चार-पांच दिन से अधिक चेतराम जी कहीं ठहरते नहीं थे। राकेश उन्हें वहीं ले जाता जहां उनकी इच्छा होती थी। चेतराम जी की इच्छा का पता तभी चलता था जब गाड़ी में बैठ जाते और कहते चलो नादौन में सोहन सिंह जी से मिल आते है। राकेश और उनकी पत्नी ने चेतराम जी के अन्तिम श्वास तक निष्ठा से सेवा की। राकेश की शादी हो जाने पर वे अत्यन्त प्रसन्न थे। अपने अन्तिम समय में वे शिमला आ गए। १५ दिन इन्दिरा गांधी मैडिकल कालेज अस्पताल में दाखिल रहे। भोजन भी अब नाली द्वारा दिया जाने लगा था। कभी-कभी आक्सीजन की भी जरूरती पड़ रही थी। २८-२६ जुलाई को विद्यापीठ ''गरली'' में राष्ट्रीय परिसंवाद था। डॉ. ओम प्रकाश शर्मा जी और मुझे उस राष्ट्रीय परिसंवाद में रहना था। प्रोफेसर मोहन्ती जी ६,१०,११ जून के इतिहास लेखन विमर्श संवाद में तीन दिन अपने शोधार्थियों के साथ संस्थान में रहे ही थे। उनकी इच्छा हमारे साथ काम करने की थी। डॉ. ओम प्रकाश जी ने ''हिमाचल में संस्कृत का प्रभाव'' विषय पर

कार्य किया ही था। हम वहीं से नेरी होते हुए शिमला आ गए। ३ अगस्त, २०१७ को विश्वविद्यालय परिसर में नेरी शोध संस्थान केन्द्र की ओर से शोध पत्र वाचन का कार्यक्रम था। मैं उस कार्यक्रम के बाद शाम के समय निरमण्ड निवासी बालकृष्ण को साथ लेकर इन्दिरा गांधी मैडिकल कालेज जहां चेतराम जी दाखिल थे, चला गया। राकेश से पूर्व में दूरभाष पर बात हो गई थी। अस्पताल में कुछ खाने को मन करता है इसलिए मैं कुछ समोसे राकेश और उनकी पत्नी के लिए ले गया। चेतराम जी के मुंह में भोजन की नली व आक्सीजन लगी हुई थी। आंखे स्थिर अच्छी तरह खूम रही थी। मैंने उन्हें सारे कार्य की जानकारी दी जो इन दिनों हम कर रहे थे। चेहरा भावशून्य पर पूर्व की तरह साफ चमक रहा था। १५-२० मिनट खड़े होकर मैंने उन्हें सब जानकारी दी। उसके बाद मैं राकेश और उनकी पत्नी के साथ बैठा, बात-चीत हुई। उन्होंने अपनी निजी बातें भी की। राकेश की पत्नी कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रही थी। चेतराम जी के बारे में बात हुई। दूसरे दिन चेतराम जी का जन्मदिन था। पूजन की व्यवस्था नहीं की हुई थी। ५ अगस्त को मैं सोलन के प्रो. शिव भारद्वाज जी तथा उनके तीन चार मित्रों के साथ सोलन कालेज में गया। वे मुझे रात को वहीं पर ठहरा रहे थे पर मेरा मन नहीं माना और मैं शिमला आ गया। जब में नाभा कार्यालय में पहुंचा तो ऊना के आशुतोष जी और नालागढ़ वाले आशु जी नाभा संघ कार्यालय की कार पार्किंग में खड़े थे। वे भी चेतराम जी को मिलने आए थे। हमारी चेतराम जी के स्वास्थ्य के बारे में बात हुई। आशु जी ने कहा ''मुझे ऐसा लग रहा है कि वह ज्यादा से ज्यादा एक महीना ही निकाल पाएंगे''।

अन्तिम विदाई

५ अगस्त, २०१७ को ही रात लगभग १.३० बजे चेतराम जी ने अन्तिम सांस ली। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित रहा है। प्रातः ६ बजे इन्दिरा गांधी मेडिकल कालेज से कागजी कार्यवाही पूर्ण कर ६.१५ बजे उनके पार्थिव शरीर को डाक्टर हेडगेवार भवन नाभा संघ कार्यालय स्वयंसेवकों के दर्शनार्थ लाया गया। वहां पर क्षेत्र प्रचारक प्रमुख श्रीमान् रामेश्वर जी, माननीय सह संघचालक प्रो. वीर सिंह रांगड़ा, श्रीमान् संजीवन कुमार, श्री संजय कुमार, गणेश दत्त, संजय सूद तथा अन्य सैकड़ों स्वयंसेवक उनके के अन्तिम दर्शनार्थ पहुंच गए थे। चेतराम जी के शरीर शान्त होने की जानकारी स्वयंसेवकों एवं हित चिन्तकों के मध्य चिन्गारी की तरह फैल गई। स्वयंसेवकों द्वारा अन्तिम दर्शन और श्रद्धाञ्जलि देने के बाद उनके पार्थिव शरीर को बिलासपुर जहां चेतराम जी ने ३५ वर्ष तक अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय लगाया था, लाया गया। वहां भी स्वयंसेवक अन्तिम दर्शन के लिए हमारे पहुंचने से पूर्व ही पहुंच गए थे। मण्डी, कुल्लू, हमीरपुर से भी स्वयंसेवक, बिलासपुर पहुंच गए थे। जैसे-जैसे जानकारी मिल रही थी, वैसे-वैसे चेतराम जी से घनिष्ठ संम्बन्ध रखने वाले उनके बारे में जानकारी ले रहे थे। बिलासपुर हम अधिक से अधिक ३० मिनट ही रुके और सीधे उनके पैतृक गांव ''झण्डवाला हनुमन्ता'' का रास्ता लिया। क्योंकि परिवार जनों ने उनका अन्तिम संस्कार अपने पैत्रिक गांव झण्डवाला हनुमन्ता में ही करने की बात की। उसी दिन संस्कार करना है तो सूर्य छुपने से पूर्व

अग्नि दाह होना हिन्दू धर्मानुसार अनिवार्य माना जाता है। उनकी शव यात्रा के साथ स्थान-स्थान से कार्यकर्ता जुड़ते गए। कीरतपुर से सरदार गुरदयाल सिंह जी, रोपड़ से महन्त सूर्यनाथ जी, ऊना से आशुतोष जी, बिलासपुर से किस्मत कुमार जी, नालागढ़ से नवीन जी, महेश जी, दिल्ली से सुरेन्द्र नाथ शर्मा जी, राजेन्द्र शर्मा, क्षेत्र प्रचारक बनवीर राणा जी, पंजाब के सैकड़ों स्वयंसेवक आगे जुड़ते गए। सांय ६.१५ बजे सब प्रकार की प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद उनके परिजनों एवं राकेश कुमार ने अन्तिम संस्कार किया। धर्म जागरण मंच के सह अखिल भारतीय अधिकारी मा. प्रेम कुमार जी भी पहुंच गए थे। रात्रि में उनके घर पर हिमाचल और दूर दराज से आए लोगों ने भोजन किया। अधिकांश स्वयंसेवक रात्रि को ही वापिस हो गए। हम रात्रि अबोहर धर्मशाला में रुक गए। क्योंकि चालक लोग रात्रि से ही व्यस्त व थके हुए थे। हिमाचल प्रान्त कार्यवाह श्री किस्मत कुमार जी ने वहीं से १२ अगस्त, २०१७ प्रातः १०.३० बजे बिलासपुर में श्रद्धाञ्जलि का कार्यक्रम निश्चित कर दिया। श्रद्धाञ्जलि कार्यक्रम में हजारों स्वयंसेवक व विविध क्षेत्र के सभी संगठनों के कार्यकर्ता उपस्थित रहे जिसमें केन्द्रीय अधिकारी माननीय महावीर जी, मा. प्रेम जी गोयल, मा. कश्मीरी लाल जी, मा. नरेन्द्र जी, मा. बनवीर जी, मा. हेमचन्द्र जी, श्री संजीवन जी, मा. प्रेम कुमार धूमल जी, मा. जय प्रकाश नड्डा जी, पूज्य महन्त सूर्य नाथ जी, प्रान्त संघ चालक कर्नल रूप चन्द जी उपस्थित रहे। सभी ने स्वर्गीय चेतराम जी के साथ बिताए आत्मीय क्षणों के बारे में अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

समन्वय प्रमुख, ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति
शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)

संस्मरण

दृढ़ इच्छा शक्ति

महन्त सूर्यनाथ

प्रिय मित्र चेतराम जी के बिछुड़ने का दुःख हुआ। हम दोनों का संघ शिक्षा वर्ग - प्रथम वर्ष सन् १९७२ में कैथल, हरियाणा में हुआ था। उस समय वर्तमान उत्तर क्षेत्र पंजाब प्रान्त ही था। महन्त बनने के बाद मैंने संघ का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। मेरी चेतराम जी से मित्रता इस प्रकार से हुई कि जब उन्होंने अपना परिचय अबोहर से बताया तो मैंने अपने एक दूसरे महन्त, जो अबोहर के आसपास ही कहीं रहते थे, उनकी जानकारी चेतराम जी से लेनी चाहिए। चेतराम जी ने कहा कि वे मेरे घर से दो किलोमीटर की दूरी पर रहते हैं। संघ शिक्षा वर्ग में बढ़ा मित्रता का हाथ अन्तिम समय तक मजबूत रहा।

एक दिन उसी संघ शिक्षा वर्ग में दोपहर के भोजन में गलती से चटनी में जमालघोटा डाल दिया। खाना खा चुके सभी शिक्षक व शिक्षार्थियों को दस्त शुरू हो गए। पांच लोगों को अस्पताल में दाखिल करवाना पड़ा और दो को तो घर ही भेजना पड़ा, ऐसी स्थिति बनी। चेतराम जी को स्वयं १६ बार शौच जाना पड़ा। इस हालत में भी चेतराम जी दूसरे स्वयंसेवकों को अस्पताल पहुंचाने के काम में जुटे हुए थे। इससे मुझे ही नहीं सभी शिक्षार्थियों को हैरानी हो रही थी। ऐसी थी उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति।

मुझे विश्वहिन्दू परिषद् के साथ जोड़ने का कार्य चेतराम जी ने ही किया था। मैं राजस्थान से ज्वालाजी, कांगड़ा आ गया था और चेतराम जी का पुनः मुझसे मिलना बढ़ गया। एक दिन चेतराम जी मा. महावीर जी को परिचय के लिए ज्वालाजी ले आए। मा. महावीर जी उस समय कांगड़ा विभाग प्रचारक थे। परिचय के उपरान्त मा. महावीर जी ने सुझाव जी दिया कि महन्त जी आपको विश्वहिन्दू परिषद् के कार्य में सक्रिय होना चाहिए। चेतराम जी के लगातार आने-जाने से मैं विश्वहिन्दू परिषद् में सक्रिय हो गया।

घर वापिसी नहीं

चेतराम जी ने निर्णय ले लिया कि अब मैं प्रचारक नहीं रहूंगा। वे मेरे पास आए। हम रात्रि ११.३० से प्रातः के ४ बजे तक आपस में बातें करते रहे। विषय यही था कि जो भी हो संघ का कार्य तो करना ही है। मैं उन्हें समझाने में लगा रहा। मैं चाहता था कि ये घर वापिस न जाए। चेतराम जी ने प्रातः ३.४५ बजे कहा – महन्त जी! मेरी घर वापिसी नहीं प्रचारक जीवन से वापिसी है। फिर मैं संतुष्ट हो गया। चेतराम जी की कर्मठता, दृढ़इच्छा शक्ति सदैव हिन्दू समाज को प्रेरणा देती रहेगी।

मार्गदर्शक विश्वहिन्दू परिषद्,
सप्तदेवी मन्दिर, किन्नू, जिला - ऊना (हि.प्र.)

ईश्वर ने मुझे संघ कार्य के लिए भेजा है

डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

पांच अगस्त को सुबह अबोहर से शाम सुन्दर का फोन आया। शाम सुन्दर ने चकमोह में मेरे पास रह कर बीए की पढ़ाई की थी। बाद में एलएलबी पास कर वह वकील बन गया और अबोहर में वकालत करने लगा। लगभग दो साल पहले वह मुझे अबोहर में ही मिला था। आज सुबह-सुबह उसके फोन से मैं थोड़ा आश्चर्य चकित था। उसने बताया कि चेतराम जी का रात्रि को शिमला के अस्पताल में निधन हो गया है और आज ही सायं को अन्तिम संस्कार झण्डवाला हनुमन्ता में है। यह स्थान अबोहर के पास ही है। लेकिन पंजाब से उनका सम्बन्ध केवल जन्म का और अन्तिम संस्कार का ही बना। अबोहर के डीएवी कालेज से बीए करने के बाद उन्होंने सामान्य जीवन जीने के बजाए अपने लिए नया रास्ता खोजने का निर्णय लिया और इस निर्णय ने उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रचारक बना दिया। प्रचारक के नाते उन्होंने अपना अधिकांश जीवन हिमाचल प्रदेश में ही व्यतीत किया। हिमाचल प्रदेश मे तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शायद ही ऐसा कोई कार्यकर्ता हो, जिसका कि चेतराम जी से सम्पर्क न हुआ हो। चेतराम जी मुझसे लगभग तीन साल बड़े थे। इसलिए मैं कल्पना कर सकता हूं कि आज से लगभग पचास साल पहले जब वह आमजन का रास्ता छोड़ संघ के प्रचारक बन कर राष्ट्र साधना की धूनी रमाने लगे होंगे, तो उनके घर में कैसा कोलाहल मचा होगा। पचास साल पहले उस छोटे से गांव में एक लड़के ने बीए किया और अब न नौकरी कर रहा है और न शादी, बल्कि घर छोड़ कर जा रहा है।

यह प्रश्न इसलिए भी मेरे अन्तस्थ में आ रहा था, क्योंकि उसके तीन-चार साल बाद यही कोलाहल हमारे घर में भी मचा था, जब मैंने बीएससी करने के बाद पूरा समय देकर जनसंघ का संगठन मन्त्री बनने के लिए घर छोड़ दिया था। यह सवाल मैंने एक बार चेतराम जी से पूछा था। उन्होंने कहा, ''मैंने अपने घर वालों को बताया ही नही था। गांव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ क्या है और उसका प्रचारक होना क्या है, इसे कोई क्या जानता? इसलिए मैंने अपने पिता जी को बता दिया कि अबोहर में मुझे बैंक में नौकरी मिल गई है।'' लेकिन कुछ महीने बाद उनके पिता किसी काम से अबोहर आए तो चलते-चलते बेटे को भी मिलना जरूरी समझा, पर जिस बैंक का नाम चेतराम जी ने बताया, उसके मैनेजर ने बता दिया कि कम से कम इस नाम का कोई कर्मचारी इस बैंक में नहीं है। कुछ दिन बाद चेतराम घर गए तो पिता-पुत्र में सवाल-जवाब होना स्वभाविक था। चेतराम जी ने पिता को बताया कि मैं उस बैंक में नहीं हूं जिस में आप गए थे, बल्कि दूसरे बैंक में हूं। पर वह जल्दी ही समझ गए कि कितनी बार बैंक का नाम बदलता रहूंगा, क्योंकि अबोहर और झण्डवाला हनुमन्ता का

फासला ज्यादा नहीं है। इसलिए वह अबोहर से रोपड़ आ गए। चेतराम जी का मानना था कि रोपड़ उनके घरवालों की पहुंच से पर्याप्त दूरी पर है। लेकिन पुत्र मोह में फंसे पिता, दूर-परदेस में फंसे पुत्र के लिए एक दिन खाने का सामान लेकर रोपड़ भी पहुंच गए। चेतराम जी तो नागपुर में संघ के एक शिविर में गए हुए थे, लेकिन पिता के आगे भेद सारा खुल गया था। उसके बाद घर में जो हंगामा हुआ। लेकिन चेतराम जी अपने संकल्प के पक्के निकले। अलबता वह रोपड़ से हिमाचल प्रदेश में आ गए और अन्त में यहीं के होकर रह गए।

मेरा चेतराम जी से परिचय उनके रोपड़ के दिनों में ही हुआ था। मैं उन दिनों नंगल के शिवालिक कालेज में पढ़ता था और नवाजी महाराज के आश्रम में रहता था। उनमें कार्यकर्ताओं की चिन्ता का भाव रहता था। स्वयंसेवक या कार्यकर्ता को वह अपने परिवार का अंग ही मानते थे, इसलिए उसके सुख-दुख में सम्मिलित होते थे। अपनी व्यक्तिगत समस्याएं भी कार्यकर्ता उनके साथ साझा करते थे और वह उनके समाधान के लिए पूरी कोशिश करते थे। इसलिए उनका कार्यकर्ताओं के साथ केवल संगठनात्मक सम्बन्ध ही नहीं था, बल्कि आत्मीय सम्बन्ध था। यही कारण है कि आज हिमाचल में हजारों हजार कार्यकर्ता ऐसे हैं जिनका चेतराम जी के जाने से लगता है कि उनके अपने परिवार को कोई व्यक्ति चला गया है। स्वभाव से वे मुंहफट थे। घुमा-फिरा कर बात करने और कहने का उनका स्वभाव नहीं था। डीएवी कालेज अबोहर में अध्यापक रहे प्रो. बृजलाल किनवा जी एक किस्सा सुनाते थे। कालेज में अध्यापकों के दो गुट थे। स्वाभाविक रूप से एक प्रिंसीपल के साथ था और दूसरा विरोध में। प्रिंसीपल ने एक बार गांव के कुछ लड़कों को बुला कर अपने विरोधी गुट के अध्यापकों के खिलाफ मोर्चा लगा लेने के लिए उकसाया। मोर्चा तो लगा, लेकिन भेद भी खुल गया। लेकिन प्रिंसीपल यह क्यों मानता कि इसके पीछे उसका हाथ है। लड़के बुलाए गए। बाकी लड़कों ने तो प्रिंसीपल के आतंक के चलते मानने से इन्कार कर दिया, लेकिन चेतराम ने स्पष्ट कह दिया जो प्रिंसीपल ने कहा था। यह अलग बात है कि उनकी यह स्पष्टवादिता कई बार उन पर भारी भी पड़ती थी।

जब मैं भी हिमाचल प्रदेश में आ गया तो मेरा उनसे फिर सम्पर्क हुआ। अब तक वह पूरी तरह हिमाचल के वातावरण में समरस चुके थे। रोटी छोड़कर भात पर उतर आए थे। हिमाचल प्रदेश में हमीरपुर स्थित ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान चेतराम जी की ही देन है। कल्पना यह हमीरपुर के प्रसिद्ध इतिहासकार ठाकुर राम सिंह की थी, लेकिन इसको मूर्त रूप चेतराम जी ने ही दिया था। चेतराम जी हिमाचल में राष्ट्र स्वयंसेवक संघ के प्रतिरूप हो गए थे। वह पिछले पांच-छः साल से गंभीर रूप से बीमार थे। चेतना पूरी थी, लेकिन बोलने में तकलीफ थी। धीरे-धीरे वह क्या कहना चाह रहे हैं, यह उनका निकट सहयोगी राकेश ही समझ पाता था। चलने-फिरने में तो दिक्कत थी ही, लेकिन उसके बावजूद सुख-दुख में स्वयंसेवकों के घरों में जाते थे। स्वयं कष्ट में होते हुए भी दूसरों के कष्ट को देख कर भावुक होते थे। बिलासपुर के संघ कार्यालय में रहते थे। प्रदेश भर से कार्यकर्ता

उनको मिलने के लिए आते रहते थे। दो महीने पहले मैं उनको देखने के लिए गया। क्या कह रहे हैं, समझ में नहीं आ रहा था, लेकिन उनका समझाने का प्रयास भी उतना ही बढ़ता जा रहा था। न समझा पाने की खीझ भी उनके चेहरे पर स्पष्ट देखी जा सकती थी। चेतना बनी रहे और शरीर अक्षम हो जाए, इससे बड़ा कष्ट जीवन में क्या हो सकता है, यह मुझे उसी दिन समझ में आया। लेकिन अब उनका भानजा बता रहा था कि चेतराम जी इस लोक से उस लोक में चले गए हैं। मुझे कुछ कहने का प्रयास करते हुए चेतराम जी का चेहरा बार-बार मेरी आंखों के सामने आ रहा था।

जून माह के दिनों की बात है, जब मैं चकमोह महाविद्यालय में प्रिंसीपल था। उन दिनों उस कालेज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बीस दिवसीय शिविर लगा था। तब मुझे चेतराम जी को नजदीक से समझने-बूझने का अवसर मिला था। एक दिन जब वह प्रचारक बनने के प्रारंभिक दिनों के संस्मरण सुना रहे थे, तब मैंने उनसे पूछा था कि क्या आपको प्रचारक बनने के अपने निर्णय पर पछतावा नहीं हुआ? क्या आपको कभी नहीं लगा कि एक सामान्य गृहस्थ की तरह अपना जीवन जीते तो अच्छा रहता? कुछ देर सोचने के बाद वह बोले, 'मुझे आज तक नहीं लगा कि मैंने गलत निर्णय लिया। इसके विपरीत मुझे कई बार लगता कि मुझे ईश्वर ने इसी काम के लिए दुनिया में भेजा था। यदि मैं सामान्य गृहस्थ का जीवन जीता तो शायद मैं सुखी न रह पाता। मुझे तो बल्कि इस बात का दुख रहता है कि संघ कार्य के लिए एक जीवन ही समर्पित कर पाऊंगा।'

प्रारंभिक सालों के बाद चेतराम जी के पिता जी ने भी उनके इस निर्णय को स्वीकार कर लिया थ। बहुत कम लोगों को पता होगा कि उनके पिता जी का जब पकी उम्र में देहांत हुआ तो पता चला के वह मरने के बाद अपनी आंखों का दान कर गए थे। चेतराम जी को मेरी श्रद्धांजलि।

कुलपति, हिमाचल प्रदेश
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला,
जिला कांगड़ा (हि.प्र.)

जीवन दर्शन

डॉ. ओम प्रकाश शर्मा

समाज के लिए समर्पित कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनसे भावी पीढ़ी सदा ऊर्जा ग्रहण करती रहती है। श्रद्धेय चेतराम जी के जीवन दर्शन से भी हमें ऐसी ही ऊर्जा प्राप्त होती रही है। ईस्वी सन् २००५ से जब मैं राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय हमीरपुर में कार्यरत था, उस समय सायंकाल श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी से ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर में मिला करता था। माननीय चेतराम जी से ठाकुर साहब अकसर जिक्र किया करते थे। एक दिन माननीय चेतराम जी ने मुझसे कहा कि ओम प्रकाश जी! आप ठाकुर राम सिंह के दिशा निर्देशों को गंभीरता से उनका उपयोग करें। ये शब्द मुझे शोध संस्थान के प्रति समर्पण के भाव को जागृत कर गए। श्रद्धेय चेतराम जी के ये शब्द मुझे तब समझ में आए जब माननीय ठाकुर राम सिंह जी का देहावसान हुआ।

वस्तुतः ऐसी विभूतियां भविष्य के कालदर्शन के लिए अपनी भूमिका सूत्र वाक्यों द्वारा प्रस्तुत करती हैं। ऐसे महान चिन्तक समाज की नींव के पत्थर होते हैं और बुद्धिजीवियों के लिए ऊर्जा के असीम भण्डार। मैं तो उनके शब्द ब्रह्म की ऊर्जा की कुछ बूंदों का ही रसपान कर पाया हूं। आज भी उनका जीवन दर्शन हम सब के लिए प्रेरक है।

लेखक प्रमुख, ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति
शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)

आत्मीय रिश्ते

प्यार चन्द परमार

सन् १९९६ में मैं ऊना में सरकारी सेवा में कार्यरत था। वहीं पर संघ का स्वयंसेवक बना और मुख्य शिक्षक का दायित्व मुझे मिला। वहीं पर राजेन्द्र जी ने मेरा परिचय श्रीमान चेतराम जी से करवाया था। वे दोनों अकसर अपने घर पर आया करते थे। सन् २००५ में मेरा स्थानान्तरण ऊना से किन्नौर रिकांगपिओ हो गया। परिवार ऊना में ही था।। इसलिए परिवार की चिन्ता होना स्वभाविक है। मुझे पत्नी से यह बता कर निश्चिन्त कर दिया कि राजेन्द्र जी और चेतराम जी का घर पर आना पूर्व की तरह है। बल्कि अब तो वे आप के स्थान्तरण के बाद विशेष ध्यान रखते हैं।

चेतराम जी उन दिनों निम्बू और शहद वाली चाय पिया करते थे। उन्होंने विशेष रूप से उस चाय को बनाने के लिए कहना और बड़े चाव के साथ उसे पीना। मुझे संघ और संगठन की आत्मीय शक्ति की सूझबूझ श्रीमान चेतराम जी से ही प्राप्त हुई। नेरी में शोध संस्थान बनने के उपरान्त तो उनका सानिध्य स्थाई रूप से मिलने लगा था।

गांव नेरी, डा. खगल
जिला हमीरपुर (हि.प्र.)

चित्रावली

महन्त सूर्यनाथ जी तथा आशुतोष जी के मध्य में श्रीमान् चेतराम जी

कुल्लू टोपी में पूर्व प्रान्त संघचालक माननीय पंण्डित जगन्नाथ जी के साथ
प्रसन्न मुद्रा में श्रीमान् चेतराम जी

चित्रावली

लेह-लद्दाख की यात्रा के समय मध्य में माननीय ठाकुर राम सिंह जी के साथ
दायं ओर चेतराम जी और बायीं ओर डॉ. केवल कृष्ण जी

पूर्व मुख्यमन्त्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल जी तथा चेतराम जी एक दूसरे का अभिवादन करते हुए

चित्रावली

ऐतिहासिक नगरी सुजानपुर में श्रीमान चेतराम जी हिमाचल टोपी पहने मंगोलिया के राजदूत माननीय वोरो शिलोव ऐंखबोलड के साथ राष्ट्रीय परिसंवाद के शुभ अवसर पर पूजा में बैठे हुए दाएं से बांए सर्व श्री चेतराम जी, प्रेम सिंह भरमौरिया जी, श्री उर्मिल ठाकुर तथा अश्वनी शर्मा जी(अक्तूबर, ३१, नवम्बर १,२ सन् २००९)

ईटानगर - गोम्पा (बुद्ध मन्दिर) के परांगण में माननीय ठाकुर राम सिंह जी और श्री जयकृष्ण शर्मा जी के मध्य में श्री चेतराम जी (२८-०२-२००७)

चित्रावली

शोध संस्थान नेरी में साहित्य भण्डार का उद्घाटन करते हुए (दाएं से बाएं) सर्वश्री चेतराम जी, मा. ठाकुर राम सिंह जी, श्री देवराज शर्मा जी, श्री प्रेम सिंह भरमौरिया जी, माननीय महन्त सूर्य नाथ जी (७ अगस्त, २००८)

सरस्वती का पूजन करते हुए माननीय चेतराम जी

कार्यकर्ता की संभाल

राजेन्द्र कुमार शर्मा

मेरी श्रीमती जी के दायें बाजू में काफी तकलीफ थी। डाक्टरों ने सि.टी. स्कैन और एम.आर.आई करने के बाद हमें बताया कि बाजू में हड्डी के अन्दर (गांठ/रसौली) है और इसका उपचार किसी बड़े हस्पताल में ही होगा। उस समय बेटा ग्यारवीं में और बेटी ७वीं में पढ़ रही थी। परिवार में चिन्ता की स्थिति हो गई। हम पी.जी.आई. चण्डीगढ़ चले गए। उसी समय माननीय चेतराम जी का फोन आ गया। उन्होंने सारी जानकारी ली और सलाह दी कि हम हड्डियों के अध्येता डॉ. सैन को दिखाएं। हमने वैसा ही किया। चिकित्सक ने हमसे पूरी जानकारी ली। कुछ परहेज लिखे और बताया कि अंततः शल्य चिकित्सा करनी होगी। २-३ महीने के लम्बे परीक्षणों के बाद हमें आपरेशन की तिथि मिली और बाजू का सफल ईलाज हुआ। इस दौरान माननीय चेतराम जी परिवार के सदस्य के रूप में लगातार हमसे जुड़े रहे। रोज वे फोन करके हाल-चाल पूछते रहे तथा इस विकट परिस्थिति में हमारा मनोबल बढ़ाते रहे।

प्रेरणा

वर्ष २००३ में मैं कुठेड़ा (बिलासपुर) शाखा के शाखा प्रबन्धक के नाते कार्यरत था। उस समय बिलासपुर विभाग संपर्क प्रमुख का दायित्व भी था। एक दिन माननीय चेतराम जी प्रवास के दौरान मेरे पास रुके। उन्होंने श्रीमान रत्न जी डोगरा जो उस समय अपने प्रान्त व्यवस्था प्रमुख थे के बारे में बताया कि इनकी आयु लगभग ७८ वर्ष हो गई है। प्रवास करना उनके लिए कठिन होता जा रहा है। हाथों में कम्पन की वजह से लिखने में भी तकलीफ होती है। अतः आप उनके सहयोगी के रूप में कार्य करें तो उन्हें आराम मिल सकता है। क्योंकि मैं श्रीमान डोगरा जी को बहुत निकटता से जानता था उनकी समस्या मेरे ध्यान में भी थी। लेकिन इतने बड़े कार्य को मैं कैसे निभा पाऊंगा। इतना न तो मेरा सामर्थ्य था और ना ही समय। तो मैंने अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी। थोड़ी देर चुप रहने के बाद मा. चेतराम जी फिर बोले कि संघ कार्य को हम ईश्वरीय कार्य मानते हैं और **ईश्वर संघ कार्य करने वालों को स्वयं सामर्थ्य भी प्रदान करता है और संघ में दायित्व देते वक्त-समय की उपलब्धता नहीं बल्कि कार्यकर्ता की योग्यता को ध्यान में रखा जाता है।** इतने सुनते ही मेरे सोचने का तरीका बदल गया और एक सकारात्मक सोच और सेवा भाव मन में आ गया। फिर मैंने तुरन्त हां कर दी और कार्य करते हुए कभी किसी कठिनाई का या समय के अभाव का सामना नहीं करना पड़ा। और इस को अनुभव किया कि संघ कार्य ईश्वरीय कार्य है और ईश्वर इसमें सहायक होते हैं।

महासचिव, ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)

जैसे मैंने देखा

इन्द्र सिंह डोगरा

चेतराम जी जब भी किसी भी बैठक अथवा व्यक्ति से वार्तालाव करते तो वे सदैव दूसरे व्यक्ति को अधिक से अधिक बोलने का समय देते थे। अन्त में तथा कम शब्दों में वे अपनी बात रखते थे। वे अपनी बात इतने प्रभावी ढंग से रखते कि दूसरे व्यक्ति के पास उनकी बात से सहमत होने के अलावा कोई पक्ष नहीं रहता था। बात बिल्कुल सरल शब्दों में रखना, इसके अतिरिक्त कोई बड़े से बड़ा निर्णय या छोटी से छोटी बात हो कार्यकर्ता के सांझा करना उनका स्वभाव रहा। इससे किसी भी कार्य में आम कार्यकर्ता उनके जुड़ा हुआ अनुभव करता है।

मुझे ध्यान है कि एक कार्यकर्ता का व्यापार ठीक नहीं चल रहा था। उसे आर्थिक मदद की आवश्यकता थी। उससे बात किए बगैर एक अन्य कार्यकर्ता से उसकी सहायता करवाई। उसका करोबार ठीक हो गया। वे सामने वाले व्यक्ति को तुरन्त पहचान जाते। उनकी व्यक्ति की परख अद्वितीय थी। जिस व्यक्ति को जैसा कहा वह शत प्रतिशत वैसा ही निकला, यह उनके समाज कार्य में अन्दर तक (तह तक) पहुंचने की समझ के कारण ही था।

संघ के प्रति उनका पूर्ण समर्पण था। एक बार मैंने चेतराम जी से पूछा, क्या आपने किसी आध्यात्मिक गुरु को धारण कर लिया है? तो उन्होंने स्वाभाविक रूप से कहा, 'स्वयंसेवक का गुरु भगवा ध्वज ही होता है, कोई और गुरु धारने की आवश्यकता नहीं होती है।'

एक ही चीज को दो आदमी किस रूप से देखते हैं उसका एक उदाहरण दिया करते थे। एक रास्ते पर दो आदमी जा रहे हैं। रास्ते में एक कुत्ते का अस्थि पिंजर पड़ा होता है, पहला व्यक्ति उस अस्थि पिंजर को देखकर अपना नाक मुंह बन्द कर, वहां से जल्दी से दूर निकल जाता है। जब दूसरा व्यक्ति वहां से गुजरता है। वह भी उस अस्थिपिंजर को देखता है। वह कहता है देखो कितने सुन्दर दांत हैं। जब वह कुता जीवित होगा कितना स्वामीभक्त रहा होगा, जब यह छोटा होगा तो कितना सुन्दर होगा। आओ चलो इस पिंजर को आदर सहित कहीं दबा देते हैं। अस्थि पिंजर वही है लेकिन दो व्यक्ति अलग-अलग भाव से देख रहे हैं। ऐसा क्यों? इसका हमें उतर मिलता है संस्कार भाव से। हमें सकारात्मक सोच के व्यक्तियों को तैयार करना है।

संगठन के कारण स्वयंसेवक में आत्मविश्वास कैसे मजबूत होता है यह बात वे अपने समाज की स्थिति को एक चोरी की घटना से बताते थे ''चोर ते लाठी दो जने, मैं तां बापू कल्ले।

डोगरा होजरी,
जिला बिलासपुर (हि.प्र.)

संगठन कला के सिद्धपुरुष

विजय नड्डा

श्री चेतराम जी का व्यक्तित्व प्रभावशाली ही नहीं अपितु प्रेरक भी रहा है। जब मैं १९८३ में गांव के विद्यालय से १०वीं पास करके आया तो बिलासपुर महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय में पढ़ाई करने लगा। उसी दौरान मेरा परिचय चेतराम जी से हुआ। श्री चेतराम जी कार्यकर्ता निर्माण कला के सिद्धहस्थ थे। बस एक बार परिचय में आने के बाद तो मानो मैं उनके स्नेह पाश में बन्धता ही चला गया। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व का जादू ही कहना पड़ेगा कि देश सेवा का ऐसा नशा चढ़ गया कि परिवार के कड़े विरोध, माता-पिता, भाई-भाभी व बहनों के गुस्से व आंसुओं के बीच में संघ पथ पर आगे बढ़ता गया। फिर कब शाखा जाना शुरू हो गया कब अल्पकालीन विस्तारक और कब प्रचारक बन गया पता ही नहीं चला। जीवन में जब भी मार्ग बदलने को मन किया तो श्री चेतराम जी के सामने जाते ही सब कुछ धरा का धरा रह जाता था। उनके सामने निराशा जैसा शब्द कहने का साहस ही नहीं होता था। उनका प्रेरक जीवन इसी साधना पथ पर निरन्तर डटे रहने के लिए प्रेरित करता रहा। श्री चेतराम जी बाह्य कठोरता तथा अन्तःकरण कोमल स्वभाव के लिए जाने जाते थे। वे हमेशा स्वयंसेवकों को प्रत्येक सुख-दुःख में एक परिवार के सदस्य की तरह दिखाई दिए। उनके इसी निर्मल मन और सात्विक स्नेह के कारण उन्हें ठा.भूपेन्द्र सिंह जी, ठा. अच्छर सिंह जी, श्री मनसा राम जी एवं स्व. श्री अनिल जी जैसे 'साहब वाक्य प्रमाण' मान कर उनकी आज्ञा पर कुछ भी कर गुजरने वाले सहयोगी कार्यकर्ता मिले।

श्री चेतराम जी की कार्य करने की शैली कुछ ऐसी थी कि जहां पर भी उन्होंने जो कार्य किया वहां अपनी स्थायी छाप छोड़ी है। आज भी कई कार्यकर्ता एवं स्वयंसेवक उनकी ऊर्जावान और अनथक परिश्रमी छवि अपनी आंखों में बसाए हुए हैं। उनके चेहरों पर श्री चेतराम जी के नाम स्मरण मात्र पर एक विशिष्ट प्रकार की चमक देखी जा सकती है।

चेतराम जी ने जीवन में कभी हार नहीं मानी परन्तु प्रकृति के नियम के आगे समर्पण करने पर विवश हुए। गंभीर रूप से अस्वस्थ होने पर भी प्रकृति उनकी ओजस्वी हंसी को नहीं रोक सकी। उनकी गजब की इच्छाशक्ति और स्मरणशक्ति के सभी मुरीद थे। ऐसे कर्मयोगी महापुरुष का व्यक्तित्व एवं जीवन सभी के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहेगा।

सहक्षेत्र-संगठन मन्त्री,
विद्या भारती- उत्तर क्षेत्र
गुरु गोविन्द अनकलेव, जालन्धर- पंजाब

मार खा कर मत आना, मार कर आओ

राजेन्द्र कुमार

चेतराम जी से मेरा सम्पर्क सन् १६८२ में हुआ जब मैं अपने दोनों बड़े भाईयों के साथ संघ कार्यालय बिलासपुर में रहता था। मेरे दोनों बड़े भाई कालेज में पढ़ते थे तथा मैं नौवीं कक्षा में। मुझे चेतराम जी ने कार्यालय वाले कक्ष में रहने के लिए कहा तथा कुछ अन्तराल बाद वहां चलने वाली एक सायं शाखा के मुख्यशिक्षक का दायित्व मुझे दे दिया। श्री चेतराम जी के व्यक्तित्व से मुझे संघ कार्य में लगने की प्रेरणा मिली। स्वयं तो उन्होंने जीवन का ध्येय राष्ट्र सेवा को माना, मेरे जैसे अनेकों अनेक कार्यकार्ताओं को भी उसी पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया।

उनका कहना था कि सायं शाखा सम्पर्क से चलती है। एक घंटा शाखा से पहले सम्पर्क के लिए निकलना चाहिए। जब चेतराम जी बिलासपुर आते थे तो स्वयं शाखा से एक घंटा पहले सम्पर्क के लिए निकलते थे। शाखा की साप्ताहिक बैठक शाखा के प्रति उनका आग्रह रहता था। सन् १६८२ में मुझे प्राथमिक वर्ग के लिए तैयार किया, विशाल जी भी मेरे साथ पढ़ते थे उन्होंने भी प्राथमिक वर्ग किया, प्रताप जी मुख्यशिक्षक थे। वर्ग के बाद संघ के प्रति मैं आकृष्ट होता चला गया। गर्मी की छुट्टियों में विस्तारक के रूप में झण्डूता भेजा। संघ का कार्य कैसे करना, इस प्रकार की छोटी-छोटी बातें चेतराम जी सिखाते थे। सन् १६८३ में मैंने दसवी की परीक्षा दी, इन्हीं दिनों पहली बार हिमाचल प्रांत का संघ शिक्षा वर्ग पुराना कांगड़ा में लगा। वहां से मैंने संघ शिक्षा वर्ग किया। चेतराम जी वर्ग में योगचाप सिखाते थे।

प्रथम वर्ष करने के बाद चेतराम जी ने मुझे बिलासपुर नगर का कार्य दिया। नगर में ६ सायं शाखायें चलती थी। १६८४ में प्रांत का संघ शिक्षा वर्ग शाहतलाई में लगा, चेतराम जी ने मुझे इस वर्ग में व्यवस्था में रहने के लिए कहा अतः मैं और विजय जी व्यवस्था में रहे।

चेतराम जी ने एक कमरा कोसरियां मे लिया जिसमें हम चार विद्यार्थी मैं, विजय, भगत राम और रूपलाल थे। वहां पर एक कालेज छात्र ने हमारे कमरे में आकर हमारी रैगिंग की, पिटाई भी की। हम काफी डर गए थे। चेतराम जी से कार्यालय में शिकायत की। चेतराम जी ने कहा यहां मार खाकर नहीं आना, मारकर आओ! हमें लगा अब क्या होगा? हम सबने योजना बनाई। जिसने हमारी रैंगिग ली थी उसे अपने कमरे में बुलाया, सभी ने मिलकर उसकी धुनाई की उसके बाद कार्यालय में जाकर चेतराम जी को सुनाई। तो चेतराम जी ने कहा, ''बहुत अच्छा, अब आपकी पूरी बात सुनेंगे।''

सन् १६८५ में मुझे संघ का कार्य करने के लिए कुल्लू और विजय जी को मण्डी भेजा गया। मैं बिलासपुर से बाहर नहीं निकला था। मैंने घर में कहा पढ़ाई के लिए कुल्लू जा रहा हूँ। कुल्लू में

युवराज जी का पता दे दिया और कहा आप कुल्लू में इन से मिल लेना। कुल्लू में जब भी चेतराम जी प्रवास पर आते थे मेरा पूरा ध्यान रखते थे। भोजन घरों पर निश्चित करवाना, स्वास्थ्य के बारे में चिंता करना। कुल्लू में रहते हुए ही १९८७ में द्वितीय वर्ष तथा १९८८ में तृतीय वर्ष किया। तृतीय वर्ष में कुल्लू से तीन शिक्षार्थी गये थे स्वर्गीय तुलाराम जी, धर्म सिंह जी तथा मैं। तृतीय वर्ष के बाद मुझे कुल्लू तहसील प्रचारक और उसके उपरान्त जिला प्रचारक का दायित्व मिला। चेतराम जी निरन्तर दायित्व के अनुसार विकास करते चले गये। १९९० में चेतराम जी प्रचारक जीवन से वापिस चले गये मुझे बड़ा आघात लगा क्योंकि वह पूरी चिंता करते थे। चेतराम जी ने बहुत संघर्ष किया। पहले गौशाला प्रारम्भ की, फिर एक ट्रक लिया उसके उपरान्त बरमाणा सीमेट फैक्टरी में ट्रकों का काम मिला, जो स्थाई था। इस बीच में उन्होंने एक बार भी मुझे एहसास नहीं होने दिया कि मेरी देखरेख वाला कोई नहीं है।

मुझे जब भी कोई बात करनी होती थी मैं चेतराम जी से बात कर लेता था। सन् २००७ में विद्याभारती हिमाचल के संगठन मंत्री का दायित्व मिला। अगस्त २००७ में लेह कार्यक्रम बना। मा. ठाकुर रामसिंह जी, चेत राम जी, डा. कुशल कुमार शर्मा हम चार लोग कुल्लू-लेह यात्रा पर गये। ठाकुर जी चेतराम जी पर बहुत विश्वास करते थे। इसके बाद काजा में जाने की बात भी कही थी पर वह अधूरी रह गई।

सन् २०१० में ठाकुर रामसिंह जी का स्वर्गवास हो गया इससे चेतराम जी बहूत टूट गये थे। इसके साथ साथ चेतराम जी को पार्किन्सन बीमारी ने घेर लिया। बीमारी की हालत में भी वे खूब प्रवास करते थे। इस दौरान वे प्रांत कार्यवाह से दायित्व से मुक्त हो गये थे। कुछ उनके केंद्र थे जहां वो अक्सर जाया करते थे उनमें नेरी शोध संस्थान, मंहत सूर्य नाथ जी का आश्रम किनू, जयकृष्ण शर्मा के घर हरोली, पण्डित जगन्नाथ शर्मा के घर भूंतर। बीमारी के कारण उनका शरीर शिथिल होता चला गया बोलचाल बंद हो गई। पर उनकी दिव्य मुस्कान तथा आंखों की चमक अन्त तक बनी रही। बीमारी की स्थिति में राकेश जी ने उनकी पूरी सेवा की।

उनका ६९ वां जन्मदिन चिकित्सालय में ही मनाया गया। ४ जुलाई २०१७ रात्रि १ बजे राकेश जी का फोन आया तो ऐसा लगने लगा कि चेतराम जी नहीं रहे। ऐसा ही हुआ राकेश जी ने कहा चेतराम जी नहीं रहे। मन को एक गहरा आघात लगा। मुझे प्रचारक जीवन में डालने वाले नहीं रहे। दो महापुरूष जिन्होंने मेरे जीवन को बदल दिया था वो दोनों नहीं रहे। चेतराम जी तथा ठाकुर रामसिंह जी। चेतराम जी की प्रेरणा से प्रचारक निकला था तथा ठाकुर जी के प्रेरणा से प्रचारक बना रहा। यह दोनों मेरे जीवन में हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे।

प्रान्त संगठन मन्त्री,
हिमाचल प्रदेश शिक्षा समिति
हिमरश्मि परिसर, शिमला-९

संघ कार्य के प्रेरणा स्त्रोत

मनसा राम

मैं सन् १६८२ की संघ की बैठक में खन्ना गया था। उसी बैठक के बाद स्वर्गीय श्री चेतराम जी को हिमाचल में प्रचारक भेजा गया था। हम दोनों बिलासपुर आ गए। बिलासपुर में उन्होंने संघ कार्य बढ़ाने के लिए सभी कार्यकर्ताओं के घर जाकर सम्पर्क किया। कार्यकर्ताओं को लेकर संघ शाखाओं में गए और सभी जानकारियां लेकर उन्होंने शाखाओं के अभ्यास वर्ग लगाए। पहला वर्ग जिसमें मैं भी था, बिलासपुर के लुणु मैदान में हुआ जो कि हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत बन गया। वहीं से शाखाओं को विस्तार देने का कार्य शुरू हुआ। हर सप्ताह ऐसे वर्ग लगाते रहे। दूसरा वर्ग श्री नयना देवी में लगाया उसके बाद विस्तार योजना शुरू हुई। जिन स्थानों पर शाखाएं लगती थी वहीं के कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग में आते और कार्य करते थे। जो स्वयंसेवक शाखाओं में आते या वर्गों में आते उन्हें ही प्राथमिक वर्ग में भेजते थे और प्राथमिक वर्गों वालों को ही संघ शिक्षा वर्गों में भेजते थे। वर्गों के बाद, स्वयंसेवकों को विस्तारक के रूप में भेजा जाता था। उन्हीं में से श्री विजय नड्डा, श्री राजेन्द्र जी, आज भी प्रचारक के रूप में हम देख रहे हैं। उन्होंने अनेक स्वयंसेवक तैयार कर कार्य को गति देने के लिए १५-१५ दिन फिर एक महीने के लिए विस्तार भेजे जिसके कारण हिमाचल में भी प्रचारक निकलने शुरू हुए। सन् १६८२ से पहले प्रचारक बाहर से आते थे परन्तु आज हम देखते हैं कि कई प्रचारक बाहर भी कार्य कर रहे हैं। इसका कारण चेतराम जी प्रत्येक कार्यकर्ता से घर में जाकर सम्पर्क करते थे। घर वाले भी उन्हें घर का सदस्य मानते थे। जिसके कारण स्वयंसेवक उन पर विश्वास करने लगे। ऐसा आज हम देख रहे हैं।

उनके साथ मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया, जिस कारण मैं संघ कार्य करने के लिए तैयार हो गया और पूरा समय शाखाओं को ही देना चाहता था। मैंने सरकारी सेवा से त्याग पत्र दिया। उसके बारे में उन्हें जानकारी मिली तो उन्होंने मुझे जिला बैठक में बुलाया और कहा त्याग पत्र वापिस लो। उन्होंने कहा, ''तुम्हारे पास छुट्टी के बाद भी संघ कार्य के लिए पर्याप्त समय होता है। मैं सरकारी सेवा में १० बजे से शाम ४ बजे तक पाठशाला में रहूंगा। यह बात उन्होंने मान ली जो मैंने भी मान ली और त्याग पत्र वापिस हो गया।

एक बार मैं बीमार हो गया और कांगड़ा अस्पताल में मुझे दाखिल करा दिया गया जिस कारण मुझे १६ दिन तक डैड रूम में रखा गया। पूरे बीस दिन मेरे साथ रह कर मुझे चेतराम जी ने ही बचाया था। वे स्वयं मेरी देखभाल करने लगे दूसरे कार्यकर्ता भी उन्होंने भेजे। मुझे बिना टीके लगाये कोई व्यक्ति नहीं मिल सकता था। ऐसे समय में दिन रात मेरे पास चेतराम जी, श्री योगेन्द्र जी, श्री

सुभाष गुप्त जी, श्री ज्ञान चन्द जी व आदि अनेक कार्यकर्ता रहे। कहने का अभिप्राय है कि यदि चेतराम जी न आते तो शायद मैं न बचता।

एक घटना का उल्लेख करता हूं। जब वे पंजाब से आए और कार्यकर्ताओं को मिलने जाते थे तो एक दिन रनी गांव जाना था। डॉ. तरसेम सिंह स्वयंसेवक थे। बिलासपुर से हम दोनों श्री नयना देवी पहुंचे वहां से रनी गांव दो-तीन किलोमीटर ही था कि शाम हो गई। हम दोनों उनके घर जा रहे थे। रास्ता भूल गए जंगल में भटक गए अन्धेरे में रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। परन्तु पीछे हटने का प्रश्न नहीं था। बड़ी मुश्किल से रात को वहां पहुंचे। दूसरे दिन फिर चले। २ किलोमीटर की चढ़ाई फिर उतराई, दरिया पार की और फिर चढ़ाई। चेतराम जी ने पहाड़ देखे नहीं थे। वे पसीने से भीग गए। रास्ते में चेतराम जी कहने लगे मैं मैदान से आया हूं। आज भी उनके वे शब्द मेरे कानों में गूंजते हैं। शायद उनका जीवन पर्वतमालाओं में ही बीतना था। उसी कारण वे हिमाचल आए थे। यहां उनका दीर्घ प्रवास उनका धैर्य, साहस और संकल्प साधना का परिणाम था। वे कभी परिश्रम करते हुए नहीं घबराए। एक घटना शाहतलाई वर्ग की है। डॉ. सुभाष जी हिमाचल सम्भाग प्रचारक थे। शाम को कार्यकर्त्ता थक गए थे सभी सो गए थे कर्मचारी भी सो गए। मैं रात दो बजे उठा तो क्या देखता हूं श्री चेतराम जी और डॉ. सुभाष जी बर्तन साफ कर रहे थे। मैं सहयोग के लिए आया तो उन्होंने मुझे डांटा और भगा दिया। मैं आज भी सोचता हूं क्या आज भी काश ऐसे महापुरुष मिलते। उनके बारे में एक पुस्तक लिखी जा सकती है। अनेक घटनाएं उनके साथ हुई जिन को कलमबद्ध नहीं किया जा सकता। मैं उन्हें से नमन करता हूं।

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते।। (गीता : ३/७)

हे अर्जुन! जो पुरुष मन से इन्द्रियों को वश में करके अनासक्त हुआ और कर्मन्द्रियों से कर्मयोग का आचारण करता है, वह श्रेष्ठ है। ऐसे ही श्री चेतराम जी लगातार शाखा कार्य को श्रेष्ठ मानते थे। अतः मन से काम करना ही श्रेष्ठ है।

गांव- ब्रह्मणी, डा. हटवाड़
जिला- बिलासपुर (हि.प्र.)

आलेख

मिलेनियम बनाम वर्ष प्रतिपदा के बहाने से

न्यू मिलेनियम का बुखार थोड़ा-थोड़ा उतरना शुरू हुआ है। कोई भी पोस्टर, टेलीवीजन कार्यक्रम व सामाचारपत्र का विज्ञापन ऐसा नहीं था, जिस पर न्यू मिलेनियम या नव-सहस्राब्दि न लिखा हो। गर्भवती महिलाओं में होड़ थी कि सहस्राब्दि के शुरू में ही संतान उत्पन्न हो। मानों उस पावन वेला में उनके घर स्वयं कोई अवतार ही आने वाला हो। सामान खरीदने की होड़ थी, मानों उस घड़ी में खरीदी गई चीज हमेशा-हमेशा के लिए अमर हो जाएगी। यह भी सभी जानते हैं कि सहस्राब्दि की शुरूआत कायदे से २००० साल पूरा होने के बाद ही होनी थी परन्तु क्या करें इतनी जल्दी थी सहस्राब्दि मनाने की कि एक वर्ष पहले ही डमडमा शुरू कर दिया। फिर यह भी शोर मचा कि फरवरी के दिन २८ होंगे कि ३० होंगे। वैसे तो ईसाई कैलेण्डर की शुरूआत ही इसी प्रकार हुई है। क्राईस्ट का जन्म पश्चिमी विद्वान सन् एक की एक जनवरी से मानते हैं और इसकी गणना पद्धति सौ पद्धति पर आधारित है जिसे ईसा जन्म से माना जाता है। परन्तु इस पर भी विवाद है। काफी विद्वान मानते हैं कि लगभग ४ वर्ष की भूल इस गणना में है। यानि सिर मुंडाते ही ओले पड़े। दूसरी गड़बड़ी यह हुई कि सन् १५८२ ई. तक साल ३६५ दिन का ही रहा और बाद में व्यवस्था परिवर्तन किया गया। लीप ईयर की व्यवस्था हुई। जो अंतर फिर भी रह गया उसका समाधान अभी तक नहीं हुआ कि कितने वर्ष बाद फरवरी ३० दिन का होगा।

सवाल यह है कि जिस कैलेण्डर ईयर में इतनी अशुद्धियां हो, ईसा के जन्म तक के विषय में विवाद हो, ईस्वी के आरम्भ को लेकर झगड़ा हो, फरवरी के दिन कितने हो इस पर भी संशय हो, सहस्राब्दि एवं शताब्दी कब प्रारम्भ होगी यह भी विवादास्पद हो, आखिर उस कैलेण्डर को सरकारी कलैण्डर की मान्यता कैसे दी जा सकती है। क्यों न भारत की गणना पद्धति को ही आधार बनाया जाए।

भारत की गणना पद्धति

वास्तव में नवीं शताब्दी तक भारतीय गणना पद्धति विश्व को ज्ञात नहीं थी। यूरोप के इतिहास में अति प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ है ''कन्डैक्स विगी लैनूअस'' यह ग्रन्थ अल्वेल्डो आश्रम से सम्बन्धित है। इस में एक से नौ तक के अंकों का उल्लेख है। परन्तु इसी पुस्तक में लिखी टिप्पणी भारतीयों का मस्तक ऊंचा कर देती है। इसमें लिखा है ''गणित चिह्नों का उपयोग के समय हमें यह अवश्य जानना चाहिए कि प्राचीन हिन्दुओं की बुद्धि अत्यधिक तीक्ष्ण और व्यापक थी। गणनकला, भूमिति इत्यादि स्वतन्त्र शास्त्रों के विषय में भी अन्य देश हिन्दुओं के अनुयायी हैं, क्योंकि इन विषयों

में हिन्दू ही अग्रगण्य है।''

यही नहीं भारत का प्राचीन ज्ञान आज भी विश्व प्रसिद्ध हस्तियों को आकर्षित करता है। इन दिनों शिमला में स्वीडन के एक न्यूक्लीयर फीजिक्स के सेवानिवृत प्राध्यपक नरेन्द्र यमदग्नि आए हुए हैं। उन्होंने बताया कि Quantum Mechanics के जन्मदाता और नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. एरविन श्रोडिंगर ने तीन प्रसिद्ध भाषण दिए जिनमें बहुत अधिक चर्चित था ''जीवन का उद्‌भव '' (The origin of life) इसके अन्तिम भाग (Epilogue) में उन्होंने लिखा कि ''मैंने जो कुछ कहा है। वह सब भारत में बहुत पहले उपनिषदों में कहा गया है।'' आयरलैंड की मतान्ध पुस्तक कम्पनी ने इस पंक्ति पर एतराज किया कि इसे लिखना ठीक नहीं रहेगा। अतः काट दिया जाये। प्रो. श्रोडिंगर ने स्पष्ट मना किया कि यह महत्वपूर्ण पंक्ति कभी नहीं कटेगी। अंततः यह पुस्तक कैम्ब्रिज प्रैस पर छपी। विश्वप्रसिद्ध वह वैज्ञानिक भारत के ग्रन्थों के प्रति कृतज्ञता भाव रखता है, परन्तु हमारे आम महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी जब विदेशी झूठे कैलेण्डर के आधार पर मिलेनियम के बुखार में थिरकता है, तो बात कितनी शर्मनाक है, इसका अंदाजा लग सकता है।

दूसरा प्रश्न प्रो. यमदग्नि से किया गया कि क्या यह सच है कि ओपनहाईमर जैसा एटमबम का निर्माता और महान् विज्ञानी गीता का अध्येता था। इस पर प्रो. यमदग्नि ने कहा कि 'मैंने इस पर आठ पृष्ठ का लेख लिखा है।'' इसके लिए उन्होंने प्रो. ओपनहाईमर के साथ काम करने वाले लोगों से तहकीकात की यथा प्रो. विल्सन, प्रो. फाईनमैन व प्रो. डिराग से। प्रो. डिराग (नोबेल पुरस्कार विजेता) ने बताया कि सचमुच वह संस्कृत का अच्छा ज्ञाता था और वह बर्कले विश्वविद्यालय के इंडोलोजी विभाग में अक्सर जाता था। सचमुच हिरोशिमा और नागासाकी के एटमबम के विस्फोट देखकर उसे गीता के ग्याहरवें अध्याय की सत्यता का प्रमाण मिला। अब देखिए कि विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक ओपनहाईमर तो एटम की शक्ति देखकर भगवद्‌गीता के श्लोकों का परीक्षण करता है। परन्तु हमारा आम थोड़ा अधिक पढ़ा लिखा युवक अपने धर्मग्रन्थों से विमुख होता जा रहा है। गीता जयन्ती का उसे शायद ही पता हो लेकिन 'वैलेन्टाईन डे' का इन्तजार कई दिन पूर्व ही करना शुरू कर देता है। यह स्थिति बदलने का निर्णय वर्ष प्रतिपदा पर लेना चाहिए ।

कहते हैं १६२० के दशक में अंग्रेजी सरकार ने कैथरीन मायो नामक अमरीकी पत्रकार की सेवाएं भारत को, विशेषकर हिन्दुओं को बदनाम करने के लिए ली थी। इस भाड़े की लेखिका ने 'मदर इंडिया' पुस्तक लिखी। गांधी जी ने इस 'गटर इंस्पैक्टर की रपट' कहा था। अब 79 वर्ष बाद जेफरी पेन ने एक पुस्तक 'फादर इंडिया' लिखी है। कहते हैं इस पुस्तक ने दिखा दिया है कि किस प्रकार भारत ने विश्व भर के प्रखर विद्वानों को आकर्षित किया। एक विदेशी महिला **एनीबेसेन्ट** का उदाहरण प्रसिद्ध है जो इंग्लैड में रहते हुए सबसे ज्यादा फैशनेबल कपड़े पहनती थी। परन्तु भारत के रंग में ऐसी रंगी की एक साध्वी सा जीवन बिताने लगी। उन्होंने कहा **अपने चालीस वर्षों से अधिक महान धर्म पंथों के अध्ययन के आधार पर मैं कह सकती हूं कि मुझे हिन्दू धर्म जैसा सम्पूर्ण, विज्ञानसम्मत, दार्शनिक और आध्यात्मिक कोई दूसरा पंथ नहीं दिखा। जितना अधिक आप इसे जानने लगते हैं, उतना ही अधिक आप**

इससे प्यार करने लगते हैं। जितना अधिक आप इसे समझने लगते हैं, उतनी ही गहराई से आप इसका महत्व समझने लगते हैं।

अभी आऊटलुक पत्रिका के मिलेनियम अंक में भारतीय मूल के प्रसिद्ध विद्वान वी.एस. नयपाल का विवरण व साक्षात्कार छपा था जिसमें वह बड़े धड़ल्ले से रामजन्मभूमि आन्दोलन की तारीफ कर झूठे सैकुलरवादियों के मुंह पर तमाचा दे मारते है।

हिमाचल तो वैसे भी उस विदेशी पादरी को जानता है कि जो आया तो था भोलेभाले भारतीयों को ईसाई बनाने, पर स्वामी सत्यानन्द के ज्ञान से प्रभावित हो सत्यानन्द स्टोक्स बन गया। (अभी एक मास पूर्व ही थानाधार के प्राथमिक शिक्षावर्ग में गया था।) थानाधार में हिन्दू बने स्टोक्स का मन्दिर में लकड़ी की दीवारों पर गीता के श्लोक किसी को भी भारतीय या हिन्दु संस्कृति के आगे नतमस्तक होने के लिए प्रेरित करते हैं। इसीलिए 'मिलेनियम बनाम वर्ष प्रतिपदा' विवाद के बहाने भारतीय संस्कृति के उत्तम पक्षों को एक बार पुनः खंगालने की आवश्यकता हुई। मिलेनियम स्मरण करते ही माइकेल जैक्सन की बेहूदगियां आंखों के सामने तैरती है, वर्ष प्रतिपदा संघ का स्मरण दिलाती है। मिलेनियम का नाम आते गोआ के समुद्र किनारे अर्धनग्न, शराब में मस्त हुल्लड़बाजियां छलकती है जबकि वर्ष प्रतिपदा विक्रमादित्य की पवित्र नगरी उज्जैन का महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग का स्मरण करवाती है। बात केवल कैलेण्डर की नहीं बात भूतकाल का स्मरण कर भविष्य को उकेरने की है।

मातृवन्दना
वर्ष प्रतिपदा विशेषांक, कलियुगाब्द ५१०२,
विक्रमी संवत् २०५७, मार्च-अप्रैल २०००

समर्थ गुरु राम दास जी की ४००वीं जयन्ती

भारतवर्ष की सन्त परम्परा में समर्थ गुरु रामदास जी का एक विशिष्ट अतुलनीय स्थान है जिन्होंने अध्यात्म के दिव्य मार्ग से राष्ट्र शक्ति को सशक्त बनाया है। अतः समर्थ गुरु रामदास युग प्रवर्तक राष्ट्र भक्त सन्त थे।

उत्तर भारत में जिस प्रकार हमारे व्यावहारिक जीवन में मुख्यतः विक्रमी सम्वत् का प्रयोग होता है, उसी प्रकार पश्चिमी भारत में शक सम्वत् का अधिक प्रचलन है। इस आधार पर समर्थ गुरु रामदास के जन्म के उल्लेख में इनका जन्म शक सम्वत् १५३० की रामनवमी को महाराष्ट्र के जाब गांव में हुआ था। अतएव रामनवमी, अर्थात चैत्र शुक्ल नवमी, शक संवत् १९३० (कलियुगाब्द ५११०, विक्रमी संवत् २०६५) ईस्वी सन् १४ अपैल, २००८ समर्थ गुरु रामदास जी का ४००वां जयन्ती दिवस है।

समर्थ गुरु रामदास के पिता का नाम सूर्या जी पंत ढोसर और माता का नाम राणू बाई था। इनका बचपन का नाम नारायण था। जब राम भक्ति से इन्होंने प्रभु राम के दर्शन पा कर अपनी जीवन साधना को प्रभु चरणों में अर्पित कर दिया तो वे रामदास कहलाए। समाज प्रबोधन और समाज संगठन का अद्भुत सामर्थ्य होने से वे समर्थगुरु रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुए।

समर्थ गुरु रामदास ने त्रयोदशाक्षरी श्री राम जय राम जय जय राम महामंत्र का 13 करोड़ जाप करके दिव्य शक्ति अर्जित की और इस महामन्त्र का महात्म्य जन-जन तक पहुंचाया। उन्होंने समझाया कि मनुष्य को दृढ़ निश्चय के साथ अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक हो कर राष्ट्र और समाज की सेवा में उत्साहपूर्वक आगे बढ़ना है। सर्वशक्ति सम्पन्न रघुवीर श्रीराम जी की कृपा से समाज के संगठित श्रेष्ठ कार्यों में सफलता अवश्य मिलती है। सर्वकार्य सिद्धि के लिए इन्होंने जय जय रघुवीर समर्थ का उद्घोष किया। इन्होंने स्वस्थ एवं हृष्ट-पुष्ट जन-शक्ति को खड़ा करने के लिए देश भर में भ्रमण कर के स्थान-स्थान पर मठ एवं व्यायामशालाओं की स्थापना की। दास बोध एवं मनोबोध आदि कृत्तियों की रचना कर के समाज का कल्याणोन्मुखी मार्गदर्शन किया। कार्यों की प्राथमिकता का परियच देते हुए गुरु समर्थ जी ने लिखा है –

मुख्य हरिकथा निरूपण। दूसरें तें राजकरण।
तिसरें तें सावधपण। सर्व विषईं।।

अर्थात् पहला महत्त्वपूर्ण कार्य हरि कथा का निरूपण, दूसरा कार्य राजनीति विषयक चिन्तन और तीसरा सभी क्षेत्रों में जागरूक हो कर कार्य करना है।

महापुरुषों के बारे में समर्थ गुरु रामदास ने कहा है –

मनापासून भक्ति करणें। उत्तम गुण अगत्य धरणें।

तया माहापुरुषकारणें। धुंडीत येती।।

ऐसा जो माहानुभाव। तेणें करावा समुदाय।

जो सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति करके उत्तम गुणों को आचरण में धारण करते है, वही सचमुच महापुरुष होते हैं। ऐसे श्रेष्ठ गुण सम्पन्न महापुरुषों को लोक संगठन का नेतृत्त्व करना होगा।

समर्थ गुरु रामदास ने समाज में शौर्य भाव जागृत किया। उन्होंने छत्रपति शिवाजी को हिन्दू साम्राज्य की स्थापना के लिए प्रेरित किया और इन्हीं का आशीष प्राप्त कर के छत्रपति शिवाजी का ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी शक संवत् १५९६ (कलियुगाब्द ४७७६ ईस्वी सन् ६ जून, १६७४) को हिन्दू साम्राज्य के सम्राट के रूप में राज्याभिषेक हुआ। शिवाजी के राष्ट्रनिष्ठ असाधारण व्यक्तित्त्व से समर्थ गुरु जी बहुत प्रभावित थे। शिवाजी के प्रति उनके उदात्त भाव इन काव्य पंक्तियों में अभिव्यक्त हैं –

महामेरु तुम निश्चय के हो,
दुखी जनों के आश्रय तुम हो।
अखण्ड स्थिति के दृढ़ व्रतधारी,
इस युग के तुम राजर्षि हो।।
नित परहित रत क्षण क्षण दिन दिन,
और न दूजा कोई चिन्तन।
कौन गिन सका तेरे सद्गुण,
अनुपम अतुल तुम्हारा जीवन।।
तुम हो नरपति हयपति गजपति,
तुम हो गढ़पति भूपति जलपति।
तुम प्रतीत होते हो सुरपति,
पास तुम्हारे ईश्वर शक्ति।।

माघ कृष्ण नवमी, शक संवत् १६०३ को समर्थ गुरु रामदास जी परमतत्त्व में विलीन हो गए परन्तु इन का दिव्य जीवन हमारे राष्ट्रीय समाज का निरन्तर मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

समर्थ गुरु रामदास जी की ४००वीं जयन्ती को देश भर में समर्थ गुरु रामदास चतुर्थ जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाना देशवासियों का पुनीत दायित्व है। इस उपलक्ष्य में देश के सभी सामाजिक संगठनों, केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों से समर्थ गुरु रामदास जी के यशस्वी जीवन पर वर्ष भर भिन्न-भिन्न कार्यक्रम आयोजित करवाने का विनम्र अनुरोध है। इससे समर्थ गुरु जी के आध्यात्मिक एवं राष्ट्रीय विचारों को व्यापक विस्तार मिलेगा। राष्ट्रीय समाज में आदर्श कर्त्तव्य चेतना जागृत करने में इन आयोजनों का विशेष महत्त्व रहेगा और इससे हमारा राष्ट्रीय तथा समाजिक जीवन अधिक सुसम्पन्न और सुसंस्कृत होगा।

इतिहास दिवाकर, प्रवेशांक
कलियुगाब्द ५११०,
अंक - अप्रैल २००८

हिमाचल के संघ कार्य में एक छलांग

वर्ष प्रतिपदा के दिन जहां नया वर्ष प्रारंभ होता है, वहीं यह दिन व्यक्ति एवं संगठन में नई उड़ानों, संकल्पों एवं योजनाओं का विचार करने व 'श्रीगणेश' करने का भी सुअवसर होता है। वर्ष प्रतिपदा के दिन जन्में डॉ. हेडगेवार ने जिस राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की, भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में उस संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका रहने वाली है। संघ का प्रमुख कार्य व्यक्तित्व निर्माण करना है, जो देश के हित में काम करते हैं। वेस्टमिनस्टर में स्वामी विवेकानन्द जी एक विदेशी भक्त के घर ठहरे हुए थे। वहां कई प्रमुख लोंगों में एक चर्चा चल पड़ी कि आज की प्रमुख आवश्यकता क्या है? आर्थिक सुधार, औद्योगिक, वैज्ञानिक प्रगति, चर्च कार्य में वृद्धि जैसी कई बातें गिनाई गईं। अचानक स्वामी विवेकानन्द जी बम्ब जैसा विस्फोट करते हुए बोले, **आज आवश्यकता है ऐसे व्यक्तियों की जिनका चरित्र ज्वलन्त हो। वही सभी समस्याओं का हल ढूंढ सकते हैं।** डॉ. हेडगेवार जी उसी प्रकार के व्यक्ति निर्माण करना चाहते थे और दैनिक शाखा उसी का माध्यम है। यह व्यक्ति निर्माण का कार्य लगातार, धीरे-धीरे व विचार पूर्वक ही हो सकता है।

परन्तु दैनिक कार्य के साथ-साथ, कभी-कभी कार्य में वृद्धि करने के लिए बड़े कार्यक्रमों का भी आयोजन होता है। ऐसा ही एक बड़ा विशाल कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश में ३ अक्तूबर, १९९९ को हुआ था। कार्यकर्ताओं ने विचार किया है कि उस शुभ दिन ग्यारह हजार गणवेशधारी स्वयंसेवक पथ संचलन किया था। तब 500 शाखाओं ने ग्यारह सौ स्थानों पर प्रतिनिधित्व किया। पांच सौ घोष वादक पथ संचलन को सुरताल किया।

बड़े कार्यक्रमों के लाभ

बड़े कार्यक्रमों के मुख्यतः चार लाभ गिनाए जाते हैं। प्रथम रोजमर्रा के कार्य से भी कभी कभार नीरसता आती है, यह समाप्त हो जाती है। नहर के पानी में गति लाने के लिए उसे एक स्थान पर बांध लगाकर फिर नीचे गिराया जाता है, वही उद्देश्य इन बड़े कार्यक्रमों का होता है। दूसरा लाभ यह है कि ऐसे कार्यक्रम से एक सामूहिक उत्साह का वातावरण बनता है, जिससे सभी कार्यकर्ता काम में जुट जाते हैं। तीसरे नए-नए व्यक्तियों की भर्ती और नए स्थान जहां अभी तक काम नहीं पहुंचा था, वहां भी काम प्रारंभ हो जाता है। चौथा और प्रमुख लाभ यह होता है कि संघ के विराट स्वरूप के दर्शन होते हैं। सभी प्रकार की जानकारियों के बावजूद जैसे अर्जुन युद्ध के लिए खड़ा नहीं हो रहा था तो भगवान अपना विराट स्वरूप दिखाते हैं। उससे अर्जुन के मन का संदेह समाप्त हो जाता है। उसी प्रकार स्वयंसेवक भी संघ का यह विशाल स्वरूप देखकर आत्मविश्वास व श्रद्धा से भर जाता है।

छोटे-छोटे स्थानों से आए स्वयंसेवक भी संघ की एक विशाल छवि मन में संजो कर जाते हैं। प्रत्यक्ष आंखों से देखने का एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। अपनी अन्तिम पुस्तक 'दि हिन्दू फिनोमेनन' में प्रसिद्ध लेखक श्री गिरिलाल जैन लिखते हैं कि यदि रामजन्मभूमि के आंदोलन को ऐसा व्यापक जनसमर्थन न मिलता और आडवाणी जी की रथयात्रा के साथ समुद्र जैसा विशाल जनसमुदाय न दिखाई देता तो संभवतः उनका विश्वास भी हिन्दुत्व के इन सिद्धान्तों में ऐसा न जमता। हर युग में अर्जुन होता है और हर अर्जुन अपने इष्ट के विराट स्वरूप को देखकर ही संतुष्ट होता है। हिमाचल में 'तीन अक्तूबर' के विशाल कार्यक्रम ने हमारे हजारों स्वयंसेवकों एवं शुभ चिन्तकों के मन में एक विश्वास पैदा किया।

अन्य प्रान्तों में ऐसे सफल प्रयोग

आपको आश्चर्य होगा कि १९९९ में कर्नाटक के छोटे से मंगलूर विभाग में ऐसे कार्यक्रम में ४३४२९ पूर्ण गणवेशधारी स्वयंसेवक आए। हैदराबाद के कार्यक्रम में ५१ हजार तक संख्या पहुंची। यहां पथ-संचलन में कई मुस्लिम, ईसाई व पहले नक्सलवादी रहे युवकों ने भी चाव से गणवेश में भाग लिया। इसी प्रकार १९९९ में हरियाणा के करनाल नगर में २४००० गणवेशधारियों ने पथ संचलन किया। उन्हीं दिनों हरियाणा में भयंकर बाढ़ का प्रकोप था और कार्यक्रम के दिन भी प्रान्त कार्यालय रोहतक जलमग्न था, परन्तु निश्चय अटल था। नवम्बर १९९७ में पंजाब के लुधियाना नगर में २१००० से भी अधिक गणवेशधारियों का कार्यक्रम देखकर मुख्यमन्त्री प्रकाश सिंह बादल बोले, 'मैंने ऐसा अनुशासन जीवन में पहली बार देखा है।' मेरठ प्रान्त ने भी ३० हजार स्वयंसेवकों का कार्यक्रम किया। हिमाचल प्रदेश का भी ऐसा ही अनुभव रहा है। कभी मंडी और बिलासपुर विभाग के और अभी कुल्लू के विजयदशमी पर आठ सौ संख्या के पथ संलचन से भी नई चेतना का संचार हुआ। दस अप्रैल, १९९४ को बिलासपुर में प्रदेश के लगभग ४००० स्वयंसेवकों के पथ संचलन के तात्कालिक परिस्थितियों में एक नई ज्योति जगाई थी।

वैसे अन्य प्रान्तों के मुकाबले संख्या के हिसाब से ग्यारह हजार संख्या कम दिखाई दी हो, परन्तु प्रदेशों की जनसंख्या के अनुपात में यह लक्ष्य उत्साहजनक है या इसका पूरा लाभ उठाने की दृष्टि से निम्नलिखित चार अन्य बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक होगा।

१. संचलन का अभ्यास

वेद का मन्त्र कहता है **संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्** अर्थात् कदम से कदम से मिलाकर चलने से और स्वर से स्वर मिलाकर बोलने से दिल भी आपस में मिलते हैं। दूरदर्शन पर बार-बार गाए जाने वाला गीत ''मिले सुर मेरा तुम्हारा.....'' शायद उस बात को ही कहता है। पथ संचलन वेद वाक्य को चरितार्थ करने का कार्य है। जैसे सेना व पुलिस आदि के लिए कदम मिलाकर चलना जरूरी है वैसे ही आम समाज के लिए भी है। चलना आदमी स्वयं सीख जाता है, वह प्रकृति है।

लेकिन कदम से कदम मिलाकर पथ संचलन, यह सिखाना पड़ता है, इसके लिए प्रयत्न करना पड़ता है। इसलिए यह 'संस्कृति' है। संघ के संचलन समाज के लिए प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। कभी संघ विरोधी कहे जाने वाले पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने भी चीन के युद्ध के समय स्वयंसेवकों के योगदान से प्रसन्न होकर उन्हें १९६३ की गणतन्त्र दिवस परेड में भाग लेने का निमन्त्रण दिया तो वह दृश्य अत्यन्त प्रेरक था। तीन हजार से अधिक स्वयंसेवक जब घोष की स्वरलहरियों पर बढ़ रहे थे तो पूरे हिन्दू समाज का सीना चौड़ा हो रहा था। १९६९ में कर्नाटक के एक पथ संचलन को देखकर सेवानिवृत थलसेनाध्यक्ष जनरल करियप्पा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वयंसेवकों के संचलन की सेना से तुलना की तो वे भी गद्‌गद थे, समाज भी।

मा. सुदर्शन जी अक्सर कहते हैं कि पथ संचलन "गणवेश में जुलूस" नहीं होना चाहिए। वे एक फौजी की बात सुनाते हैं। एक सेनानिवृत्त सैनिक दूध का मटका सिर पर लिए जा रहा था, तो एक बच्चे को शरारत सूझी। जोर से बोला, "लेफ्ट-राईट, लेफ्ट-राईट!" फौजी भाई एकदम सीना चौड़ा करके, बाजू हिलाकर रूट मार्च की तरह बढ़ने लगा तो मटका गिर कर फूटा और दूध बिखर गया। भयभीत भागते बच्चे को फौजी ने पकड़ा तो बच्चा गिड़गिड़ाने लगा। फौजी ने पूछा, "पहले यह बता कि मेरी परेड कैसी थी"? "बहुत अच्छी थी" – बच्चा बोला। फौजी बोला, "बस फिर दूध गिरने का गम नहीं, परेड में कोई कमी नहीं होनी चाहिए "।

हमारा अनुशासन सेना के अनुशासन से भिन्न, स्वप्रेरित होता है, परन्तु अपना अभ्यास भी बढ़िया होना चाहिए। इसके लिए काफी प्रयत्न करना पड़ता है।

पथ संचलन के समय समाज सड़क के दोनों ओर खड़ा जयघोष भी करता है, पुष्प वर्षा भी करता है, मार्ग में रंगोली भी सजाता है, स्वागतद्वार भी लगाता है। सुंदरनगर में हम में से अधिकांश को ध्यान होगा कि कैसा दिव्य दृश्य था। कैसे एक बुजुर्ग पथ संचलन को देखकर लाठी ऊपर उठाकर एकदम प्रसन्न मुद्रा में जयघोष लगा रहा था और आंखों से अविरल आंसू की धारा भी बहा रहा था। साथ ही कह रहा था, "ऐसा नजारा फिर नहीं देख पाऊंगा।" ऐसे अवसर पर स्वयंसेवक को समाज निहार रहा होता है, उसके कदम देख रहा होता है, उसकी दृष्टि देख रहा होता हैं। ऐसे पथ संचलन के लिए कितना अभ्यास चाहिए, इससे अनुमान लगाया जा सकता है।

२. गणवेश की तैयारी

आप सभी जानते हैं कि यह कार्यक्रम पूर्ण गणवेश में होगा। उसका भी विशेष महत्व है। प. पू. श्री गुरु जी प्रथम विश्व युद्ध के समय का एक सैनिक का उदाहरण देते हैं। अंग्रेज सरकार ने सभी पुराने सैनिकों को बुलाया। एक सैनिक युद्ध स्थल पर नहीं जाना चाहता था। पुलिस तलाशी वारंट लेकर आई तो वह महिलाओं के वस्त्र पहन कर घर में छुप गया। उसकी पत्नी ने भी पुलिस को बताया कि वह घर पर नहीं है, केवल उसकी बहन ही घर में है। पुलिस को संदेह होने पर उसे पुकारा और उस

रोते चिल्लाते व्यक्ति को पकड़ कर ले गए। वहां जब वह सैनिक वेश में जच कर तैयार हो गया तो ऑफीसर ने उससे पूछा कि क्या घर लौटना है? ''घर लौटने का प्रश्न पैदा नहीं होता, मैं सैनिक हूं, युद्ध स्थल पर ही जाऊंगा।'' वह कड़ककर बोला। यह है वर्दी का असर।

संघ का गणवेश भी एक प्रकार से ऊर्जा देता है। अनेक प्राकृतिक आपदाओं, दुर्घटनाओं व युद्धों आदि में निक्कर वेश में सेवाकार्य करने के कारण समाज में गणवेश के प्रति एक आस्था बनी है। समाज आशा भरी निगाह से निक्करधारी को देखता है। गुंडों द्वारा सताई उस महिला का उदाहरण स्मरण करने लायक है जो शाखा जाते एक स्वयंसेवक के पीछे सहमी-सहमी चलती है और पूछने पर कहती है, ''मैं आपको तो जानती नहीं, परन्तु आपकी निक्कर को जानती हूं और यह भी जानती हूं कि निक्कर वाले अपनी जान जोखिम में डालकर भी महिला की इज्जत को बचाते हैं।'' अतः अत्यंत गर्व से गणवेश को डालना चाहिए। गणवेश पूरा अभी से खरीदना चाहिए और उसको संभाल कर भी रखना चाहिए। ऐसे पुराने स्वयंसेवक हमें अवश्य मिलते होंगे, जो तीस-चालीस साल पुरानी निक्कर, बेल्ट व संघ की टोपी को अभी तक सहेजे हुए हैं।

३. घोष

विशाल कार्यक्रम के पीछे की भूमिका के स्मरण, पथ संचलन के नियमित अभ्यास व गणवेश की पूर्ण तैयारी के साथ-साथ एक और महत्वपूर्ण काम है घोष (संघ का बैंड) सज्जित करना एवं सीखना। पथ संचलन में घोष नितान्त आवश्यक है, बल्कि यही संचलन सौन्दर्य को बढ़ाता है। परन्तु इसकी सिद्धता विशेष मेहनत मांगती है।

संघ के घोष का राष्ट्रजीवन में भी महत्वपूर्ण योगदान है। प्रारंभ में पूरे देश में प्रचलित बैंड की धुनें विदेशी ही थीं। हम भी वही बजाते थे। नागपुर, पुणे व बेंगलूर के स्वयंसेवकों का घोष के भारतीयकरण में विशेष योगदान है। धीरे-धीरे भारतीय रागों पर आधारित रचनाएं बनने लगीं और इंपीरियल, मार्ने व मार्चिंग एलोंग जैसी अंग्रेजी धुनों का स्थान किरण, चेतक, तिलक कामोद व कावेरी जैसी रचनाओं ने लेना प्रारंभ किया। ध्वज चढ़ाने में शायद विश्व की एक ही रचना 'डोनेवालान' का स्थान संस्कृत श्लोक ''ॐ नमोस्तुते ध्वजाय'' के रागश्री ने लिया।

शायद आपको आश्चर्य हो कि अत्यन्त मधुर ''शिवराजः'' नामक वंशी की जिस सुन्दर रचना को एशियाड (८२) में नौसेना के बैंड ने बजाया और गुट निरपेक्ष देशों के सम्मेलन में दुबारा दुनिया के प्रतिनिधियों के सामने बजाया गया, उसका निर्माता एक स्वयंसेवक ही है। यह जानकर आपको गर्व होगा कि इन वाद्यों के नामकरण ''पणव (बॉस ड्रम), आनक (साईड ड्रम), झल्लरी (सिम्बल) भी संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित वाद्यों के आधार पर स्वयंसेवकों ने ही किए हैं। इतना बड़ा प्रयास इस दृष्टि से हो चुका है। जब १९७३ में कर्नाटक के ३७५ स्वयंसेवकों ने घोष का सामूहिक वादन किया तो सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भाव विभोर होकर कहा था, ''मैं जानता हूं कि इतने विशाल

स्तर पर एकरूपता प्राप्त करना कितना दुष्कर कार्य है। सेना में भी अभी तक हम इतना बड़ा प्रयास नहीं कर पाए। इसके लिए तो ऐसा प्रचुर प्रशिक्षण चाहिए, जिसमें गति हो, अनुशासन हो और कल्पना शक्ति हो।'' सचमुच १९२७ में दान दक्षिणा की राशि से खरीदे गए एक बिगुल व साईड ड्रम के बैड से प्रारंभ होकर, अब शायद संघ का घोष गिनीज बुक ऑफ बर्ल्ड रिकॉर्ड्स के घोष के सारे कीर्तिमान - (संख्या व गणुवता के) ध्वस्त करने की क्षमता रखता है। बैंगलूरू में १९८२ के 'हिन्दू संगम' में १२५० घोषवादक थे, लालजाई (महाराष्ट्र) में १९८३ में १३५०, १९९६ मंगलूर कार्यक्रम में १९२५ और विदर्भ के घोष शिविर (१९९८) में १२०० घोष वादक थे। हमारे घोष की परम्परा इतनी बड़ी और गौरवशाली है।

हिमाचल में इस दृष्टि से अच्छे प्रयास पहले भी हुए हैं और अब भी चल रहे हैं। कुल्लू, शिमला व बिलासपुर में परिणाम भी अच्छे दिखाई देते हैं। अभी इस ओर काफी ज्यादा प्रयत्नों की आवश्यकता है। हां, एक बात जरूर स्मरण रहनी चाहिए कि देवभूमि हिमाचल जहां हर गांव का अपना एक देवता है और देवता की आरती के लिए गांव-गांव में वाद्य और वादक हैं, बच्चे-बूढ़े जहां हर प्रसंग पर गीतों के साथ नृत्य करते हैं, वहां घोष या संगीत हमारे रक्त में पहले से ही है। प्रयास करेंगे तो सफलता अच्छी मिलेगी। शिक्षक है, सिखाने की कैसेट्स हैं, साहित्य है, बस हमारा संकल्प चाहिए कि मैं अपना शंख (बिगुल) शीघ्रातिशीघ्र खरीद कर रोजाना अभ्यास करूंगा। फिर ५०० संख्या का जो लक्ष्य तय किया है, गुणवत्ता व संख्या की दृष्टि से पार तो निश्चित होगा ही, हमारे जीवन में भी संगीत घोलेगा।

४. मानसिक तैयारी और वैचारिक परिपक्वता

चौथा महत्वपूर्ण पक्ष है, नए पुराने स्वयंसेवकों में और अधिक वैचारिक दृढ़ता लाना। संघ का काम भीड़ इकट्ठा करना नहीं है। केवल कार्यक्रम को सफल करना भी हमारा उद्देश्य नहीं है। हमारा उद्देश्य तो यही है कि इस कार्यक्रम के माध्यम से स्थाई कार्य खड़ा हो।

इसके लिए कोई रचना खड़ी करनी होगी है। खंड, उपखंड, मंडल शाखा आदि के माध्यम से यह तैयारी होगी। हर ओर एक समान तैयारी हो उसके लिए अनुमानित ५० संख्या की एक वाहिनी तैयार करनी है। इसे आगे कम से कम ५ गटों में विभक्त करना है। इस प्रकार पता चलता रहेगा कि कितने प्रयास कहां हो रहे हैं? अभी तक सवा तीन सौ ऐसी वाहिनियां बनने के समाचार हैं। स्वयंसेवकों की संभाल व संस्कारित करने की दृष्टि से भी कुछ काम करने होंगे :

क.) हर वाहिनी प्रमुख अपने क्षेत्र के स्वयंसेवकों की सूची बनाएगा।

ख.) उनके पास गणवेश की क्या स्थिति है, उनके नाम के आगे लिखेगा।

ग.) कोई पुस्तक वह पढ़े, ताकि वैचारिक स्पष्टता हो - ऐसा प्रयास होगा। उदाहरण के लिए अभी ''मैं साधारण स्वयंसेवक'' की ६००० प्रतियां वितरित हुई हैं। इन पुस्तकों को पढ़ना, विचार

करना, परिवार में पढ़ाना - आदि उपक्रम करने होंगे।

घ.) मार्च मास में यह सुनिश्चित करेंगे कि हर स्वयंसेवक के और अपने प्रभाव के हिन्दुत्व प्रेमी सज्जन के पास ''मातृवन्दना'' आनी प्रांरभ हो। 'वर्ष प्रतिपदा विशेषांक' देकर उसे साल का सदस्य बनाएंगे। साल का शुल्क केवल १०० रुपये ही है।

सभी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु शाखा रहे

''पंछी उड़े कितना आकाश- दाना है धरती के पास'' - ऐसा कहा जाता है। हम जितनी भी गतिविधियां करेंगे - उन सबका केन्द्र बिन्दु शाखा ही रहेगी। मा. सुदर्शन जी ने सुन्दरनगर के कार्यक्रम में शाखा की तुलना हृदय की धड़कन से की थी। यह धड़कन बन्द हो गई जो फिर कुछ नहीं हो सकता। पूज्य बालासाहब जी अक्सर कहते थे, ''शाखा है तो सब कुछ है या हो सकता है, शाखा नहीं तो कुछ भी नहीं।'' प. पू. श्री गुरु जी का वाक्य भी स्मरणीय है – **भारतमाता - आराध्य देवता, प्रार्थना मन्त्र, शाखा - मन्दिर है।** राजनैतिक क्षेत्र में शोध कार्य करने वाले वाल्टर एण्डरसन नामक एक अमरीकी लेखक कुछ वर्ष पहले भारत-भ्रमण पर आए। उन्होंने अमरीका वासियों को संघ का परिचय कराने के लिए 'ब्रदर हुड इन सेफ्रन' (भगवे रंग का भ्रातृभाव) नामक पुस्तक लिखी। उक्त विदेशी लेखक ने कांग्रेस सेवा दल ही नहीं, अपितु भारतीय सेना को भी अधिक कार्यक्षम बनाने हेतु दैनिक शाखा पद्धति का अवलम्बन करने का सुझाव इस पुस्तक में दिया है। संघ स्वयंसेवकों का प्रतिदिन निर्धारित समय पर एकत्रित होना और दैनिक कार्यक्रमों को सुचारू ढंग से सम्पन्न करना। इस प्रक्रिया से जिस संगठित शक्ति का प्रादुर्भाव होता है, उसे देखकर लोक-नायक जयप्रकाश नारायण जैसे अनुभव एवं तपे हुए समाज सेवकों को भी आखिरी दिनों में नया नारा देने का मोह हुआ कि ''देश कार्य के लिए प्रतिदिन कम से कम एक घंटा दीजिए।'' अतः हम लोगों को घोष सिखाते, पत्रिका पढ़वाते, पुस्तिका खरीदवाते व संपर्क करते समय एक बात अवश्य ध्यान रखेंगे कि उन्हें आज नहीं तो कल शाखा पर लाना है।

हम चाहे किसी भी क्षेत्र में कार्य करते हों, कोई भी दायित्व वहन करते हों, अपनी प्राथमिकता व दैनिक कामों में शाखा अनिवार्य रूप से शामिल हो। उपर्युक्त अन्य कोई काम छूट जाए जो मलाल नहीं, परन्तु दैनिक शाखा स्वयं जाना और दूसरों को ले जाना, यह कार्य नहीं छूटना चाहिए। शाखाओं की संख्या और उन पर उपस्थिति बढ़ती रही तो सभी अन्य कार्य स्वतः या थोड़े प्रयास से ही संभव हो जाएंगे।

हम देश-प्रदेश की बिगड़ती परिस्थितियों से परिचित होंगे। शान्त 'देवभूमि हिमाचल' अशान्त होता जा रहा है। नशीले पदार्थों का युवकों में बढ़ता प्रचलन नशेड़ी पर्यटकों की देखादेखी से बढ़ रहा है और सांस्कृतिक प्रदूषण के कीटाणु छोटे-छोटे गांवों में पहुंच रहे हैं।

मुश्किल है बहुत मुश्किल, अब घर से निकल पाना, कागज की छतरियां है, बरसात अंगारों की।

किसी निराश कवि के शब्द किसी के मुंह पर आ सकते हैं, परन्तु हमें पूर्ण विश्वास है कि इन अंगारों की बरसात का मुकाबला हम हिन्दुत्व व संघ के संस्कारों से करेंगे। संघ की चर्चित चिन्तन बैठक में तत्कालीन पू. सरसंघचालक रज्जू भैया जी के उस आह्वान के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं –

''इंग्लैंड के प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता व नोबेले पुरस्कार विजेता टायन्बी ने एडिनबर्ग के एक दीक्षांत समारोह में कहा – **India will be leader in 21st century. India will make great progress in every field and what is more will harmonise science and religion, the only country that could and would do it.** अर्थात् 'भारत इक्कीसवीं शताब्दी का नेतृत्व करेगा। प्रत्येक क्षेत्र में भारत आगे बढ़ेगा। इतना ही क्यों, भारत विज्ञान और अध्यात्म का सामंजस्य करेगा। यह भारत ही कर सकता है और भारत ही करेगा।' सचमुच विश्व का नेतृत्व करने की क्षमता हिन्दुत्व में है। प्रत्येक क्षेत्र में हमारी विचार करने की पद्धति ऐसी हो कि विश्व के लिए मार्गदर्शक बने।''

मातृवन्दना

वर्ष प्रतिपदा विशेषांक,

विक्रमी संवत् २०५६, कलियुगाब्द ५१०१

लक्ष्य साधक जीवन दर्शन

मेरा मन पक्का हुआ

मेरा परिचय माननीय ठाकुर रामसिंह जी से १९७१ में आया। उस समय मैं संघ में नया ही था। मुक्तसर तहसील मेरे पास थी। माननीय ठाकुर जी का दो दिवसीय प्रवास था। वे मोटर साईकल पर आये। एक दिन मुक्तसर और दूसरे दिन भलोट का प्रवास किया। तीसरे दिन मैं उन्हें फाजिल्का छोड़ आया। ठाकुर जी से हुई बातचीत चर्चा, आदि के कारण ही मुझे लगा कि हाँ संघ का काम करना चाहिए। इससे पहले मेरा मन पक्का नहीं था। आत्मीयता पूर्ण एवं विश्वास से काम करने की बात ठाकुर जी ने मुझसे कही। मुझे लगा कि मैं संघ का काम कर सकता हूँ। यह परिचय धीरे-धीरे इतना प्रगाढ़ बनता गया जो अन्तिम सांस तक ठाकुर जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। ठाकुर जी के साथ भावनात्मक लगाव ऐसा था कि उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन कार्य है।

ठाकुर जी के निर्णयों में सर्वोपरि संघ

घटना १९७९ की है। उन दिनों मैं रोपड़ जिला प्रचारक था। संभाग प्रचारक स्वर्गीय नारायण दास जी ने मेरा कार्य परिवर्तन कर मुझे पंजाब प्रान्त में भारतीय किसान संघ का कार्य दे दिया और श्री विजय जी जो वर्तमान में पंजाब प्रान्त सेवा प्रमुख हैं, उन्हें रोपड़ जिला प्रचारक का काम दिया गया। मैंने विजय जी का परिचय पूरे जिले में सभी कार्यकर्ताओं से करवाया। यह परिचय करवाने के बाद विजय जी और मैं दोनों मोहाली में श्री सुदर्शन जी के पास बैठे हुए थे। सुदर्शन जी बैंक में प्रबन्धक थे। कुछ देर बाद वहां सुदर्शन जी के पास स्वर्गीय नारायण दास जी का फोन आया। चेतराम जी और विजय जी को एक सूचना करनी है। सुदर्शन जी बोले, वे दोनों मेरे पास ही बैठे हुए हैं। आप स्वयं बात कर लो। मैंने फोन लिया तो मुझे वापिस रोपड़ बुला लिया कि तुम्हें इसी जिले में जिला प्रचारक के रूप में काम करना है। मेरी विदाई का कार्यक्रम भी हो गया था, विजय जी का परिचय भी सभी जगह हो गया था। थोड़ी शर्म भी महसूस हो रही थी, परन्तु अधिकारी का आदेश है तो उसे मानना ही है।

ऐसा कैसे हो गया तो पता चला कि ठाकुर जी से जब इस परिवर्तन की बात नारायण दास जी ने की तो ठाकुर जी ने प्रश्न किया कि क्या तुम्हें संघ का काम करने वाले कार्यकर्ता नहीं चाहिए। नारायण दास जी के पास कोई जबाव नहीं था। निर्णय बदल गया तथा पुनः मैं रोपड़ जिला प्रचारक हो गया। अर्थात् ठाकुर जी को प्रथम तौर पर संघ का कार्य चाहिए उसके बाद अन्य कार्य। इसी से जुड़ी हुई बात उनके अन्तिम क्षणों की आई। ठाकुर जी लुधियाना अस्पताल में थे। मेरा स्वास्थ्य भी कोई

ज्यादा ठीक नहीं था। ठाकुर जी का आदेश था कि तुम मेरे साथ ही रहोगे।

पूज्य महन्त सूर्य नाथ जी ठाकुर जी को मिलने अस्पताल में आए हुए थे। महन्त जी ने मेरा स्वास्थ्य देखा तो उन्होंने कहा कि आप दो दिन विश्राम कर लो, दवा ले लो तो पुनः यहां आ जाना। मैं आप को किसी कार्यकर्त्ता के घर पर छोड़ देता हूँ। ठाकुर जी को बताए बगैर यह काम होना नहीं था। मैंने महन्त जी को कहा कि आप ठाकुर जी को यह बात बताओ। महन्त जी ने ठाकुर जी को यह बात लिखकर दी। ठाकुर जी ने वह पढ़ा और स्वयं लिख कर दिया। तुम्हें महन्त जी के साथ नहीं जाना है। तुम्हें संघ का कार्य करना है। मैंने ठाकुर जी को लिखा जैसा आप कहेंगे, वैसा ही करूँगा। अर्थात् ठाकुर जी ने सोचा कि मैं संघ का काम छोड़कर साधु बन रहा हूँ। ठाकुर जी के लिए संघ सर्वोपरि था।

घटना ३ मई, १९७६ की है। आपातकाल लगा हुआ था। मैं रोपड़ में जिला प्रचारक था। ठाकुर जी के ठहरने की व्यवस्था जवाहर मार्केट में की। थोड़ी दूर पर ही भाखड़ा नहर बहती थी। ठाकुर जी ने कहा, चलो नहर की ओर चलते हैं। हम नहर की ओर चल पड़े। वहां पहुंचने पर कहा, चलो कपड़े खोलो और तैरते हैं। मुझे संकोच हो रहा था इतने तेज बहाव में कैसे तैरना। तैरना तो मैं जानता था पर पानी का बहाव तेज था। इतने में ठाकुर जी ने कपड़े खोल दिये और पानी में डुबकी लगाई और नहर को पार कर गए और वापिस भी आ गए। मैं २६ वर्ष का था मेरे पास कोई विकल्प न था और दिल पक्का करके मैंने भी हिम्मत कर ली। इस आयु में भी ठाकुर जी हिम्मत व आनन्द के साथ इतनी शक्ति भरे व दूसरों का उत्साह वर्धन कार्य करते रहते थे।

व्यवस्था पक्ष

एक दिन पण्डित जगन्नाथ शर्मा जी ठाकुर जी से मिलने कुल्लू आए। पण्डित जगन्नाथ जी का घर भुन्तर में है। पण्डित जी की इच्छा थी, कि ठाकुर जी यदि उनके घर पर अपने स्वास्थ्य लाभ के लिए रहें तो अपना घर पवित्र हो जाएगा। पण्डित जी ने ठाकुर जी से आग्रह किया कि मैं आप को भुन्तर ले चलता हूँ। वहां स्वास्थ्य लाभ लिया जाए। ठाकुर जी बोले 'यह व्यवस्था चेतराम जी देख रहे हैं। आप उन से बात कर लो।' ठाकुर जी व्यवस्था पक्ष को ध्यान में रखकर ही निर्णय किया करते थे।

नेरी शोध संस्थान से ठाकुर जी को कुल्लू श्री राम सिंह जी(कुल्लू जिला भाजपा अध्यक्ष) के घर पर स्वास्थ्य लाभ के लिए लाया गया। इस बात के लिए ठाकुर जी तैयार नहीं थे। क्योंकि उनका ध्यान नेरी के कामों में ही था। ठाकुर जी व्यवस्था पक्ष के पक्के आग्रही थे। डाक्टरों की सलाह अक्षरशः पालन करते थे। ठाकुर जी को नेरी के कामों से दूर कैसे रखा जाए जिससे उनका स्वास्थ्य जल्द ठीक हो इसके लिए डाक्टर से बातचीत करनी पड़ी। डाक्टर ने बताया, 'आपको पन्द्रह से बीस दिन ठण्डे क्षेत्र में रहने की आवश्यकता है। इस के लिए कुल्लू अथवा मनाली उपयुक्त रहेगा।'' ठाकुर जी एक दम मान गए। यदि ऐसा है तो ठीक है कुल्लू जाना उपयुक्त रहेगा। तब कुल्लू आने के लिए तैयार हुए।

मनुधाम जमीन की बात है तो ठीक है शिमला चले जाओ।

मुझे संघ कार्य की दृष्टि से शिमला जाना था। इधर ठाकुर जी कहीं जाने नहीं दे रहे थे। मैंने ठाकुर जी को कहा मुझे दो दिन के लिए शिमला जाना है। दो दिन बाद आ जाऊँगा। ठाकुर जी कुछ विचार करने लगे और कहा आपको क्या वहां मनुधाम की जमीन की बात करने के लिए मुख्यमन्त्री जी से मिलना है? मैंने हाँ कर दी। तो बोले, 'ठीक है! चले जाओ, वह काम जल्द ही हो जाना चाहिए। इस प्रकार मा. ठाकुर जी का लक्ष्य साधक विलक्षण जीवन दर्शन है।

इतिहास दिवाकर,
ठाकुर रामसिंह स्मृति श्रद्धांजलि विशेषांक
कलियुगाब्द ५११२,
अंक-अक्तूबर २०१०-जनवरी २०११